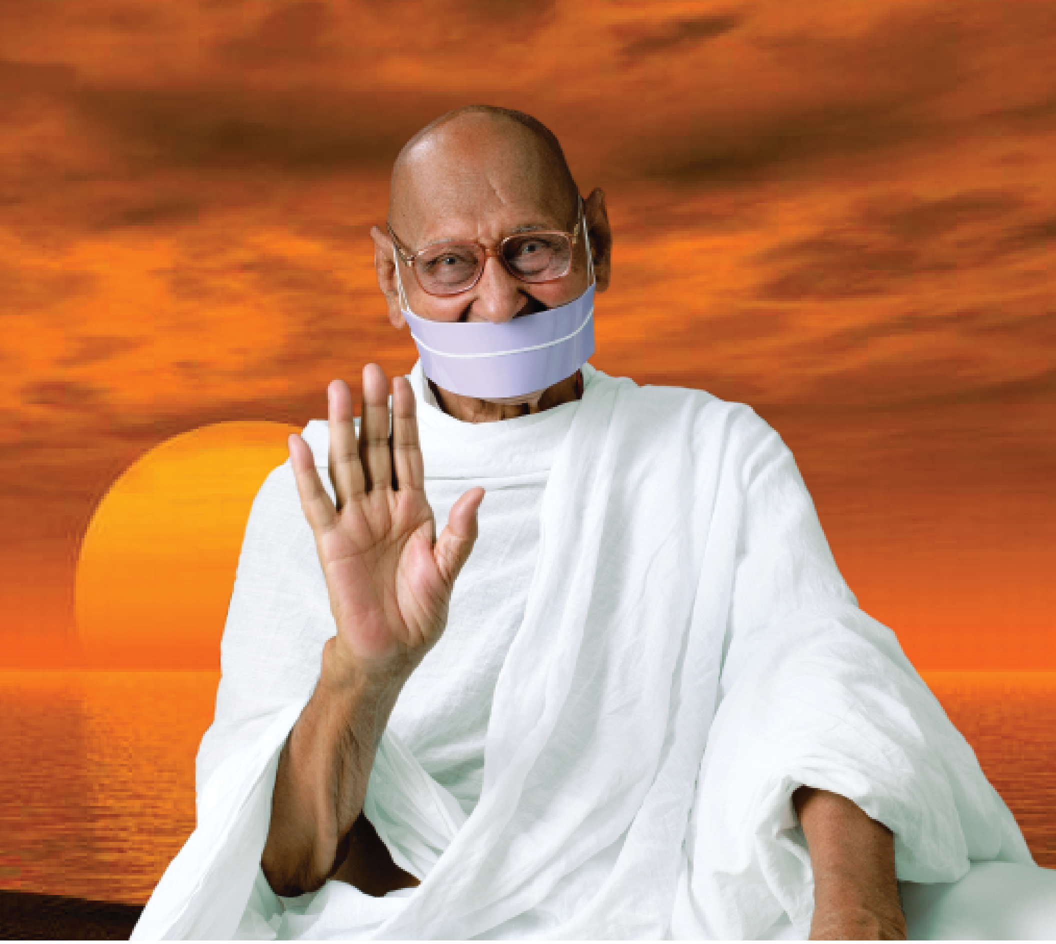

अदृश्य हो गया महासूर्य

युगप्रधान आचार्य महाप्रज्ञ के अन्तिम दिन और रात्रि का वृत्तांत

आचार्य महाश्रमण

अदृश्य हो गया महासूर्य

(युगप्रधान आचार्य महाप्रज्ञ के अन्तिम दिन और रात्रि का वृत्तांत)

आचार्य महाश्रमण

जैन विश्व भारती प्रकाशन

संपादक : साध्वी सुमतिप्रभा

प्रकाशक : जैन विश्व भारती
पोस्ट : लाडनूं-३४१३०६
जिला : नागौर (राज.)
फोन नं. : (०१५८१) २२२०८०/२२४६७१
ई-मेल : jainvishvabharati@yahoo.com

© जैन विश्व भारती, लाडनूं

प्रथम संस्करण : जून २०१२
तृतीय संस्करण : सितम्बर २०१३

मूल्य : २०/- (बीस रुपये मात्र)

मुद्रक : पायोराईट प्रिण्ट मीडिया प्रा. लि. उदयपुर, फोन नं.: २४१८४८२

सरदारशहर में पादार्पण

विक्रम संवत् २०६७ प्रथम वैशाख शुक्ला पूर्णिमा, २८ अप्रैल २०१०, बुधवार का पावन दिन। सरदारशहर की जनाकीर्ण गलियां। पूज्यपाद आचार्य महाप्रज्ञ का सरदारशहर में मंगल प्रवेश। जन-जन में उल्लास, उत्साह और उमंग से तरंगित अपूर्व आनन्द।

गधैयाजी के नोहरे में पधारने के बाद पूज्यवर ने भयंकर गर्मी को देखते हुए एक नित्यक्रम बना लिया था कि दिन में गोठी-भवन (श्री जयचन्दलालजी रणजीतमलजी गोठी के मकान) में विश्राम करना, प्रवचन के लिए श्री समवसरण (गधैयाजी का नोहरा) में पधारना और रात्रि को श्री समवसरण में ही शयन करना।

८ मई २०१० को आचार्यप्रवर गोठी-भवन में विराजे हुए थे। शनैः शनैः सूर्य अस्ताचल की ओर जा रहा था। सूर्यास्त के आसपास पूज्यवर गोठीजी की हवेली से श्री समवसरण की ओर बढ़ रहे थे। अचानक दायां पैर एक पत्थर से टकरा गया, ध्यान नहीं दिया, पैर की अंगुली से खून बहने लगा। पता तब चला, जब आचार्यवर पूर्व दिशा में स्थित हॉल में पहुंचकर पट्ट पर विराज गए। यत्र-तत्र खून के बिन्दु धरती पर बिखरे हुए थे। चरणों के नीचे बिछाए हुए लुंकार पर भी खून लगा हुआ था। मुनि जयकुमारजी (टापरा) ने तत्काल पानी से अंगुली को साफ किया और पट्टी की।

मैं सायंकालीन प्रतिक्रमण गुरुदेव से अलग स्थान में किया करता था, क्योंकि मैं जनता के सामने बैठता था और गुरुदेव कुछ एकान्त में विराजते थे। प्रतिक्रमण, अर्हत्-वन्दना का कार्यक्रम संपन्न हुआ। अर्हत्-वन्दना के बाद मैं परम पूज्यश्री के सान्निध्य में पहुंचा। मुनिश्री सुखलालजी स्वामी (सुजानगढ़), मुनिश्री महेन्द्रकुमारजी स्वामी (मुंबई), मुनि कुमारश्रमणजी (लाडनूं), अणुव्रत न्यास के प्रबंध न्यासी धनराजजी बोथरा (बीकानेर), संयुक्त प्रबन्ध न्यासी सुशीलजी जैन

(दिल्ली), अणुव्रत विश्व भारती के अध्यक्ष तेजकरणजी सुराणा (चूरू), मंत्री संचय जैन (सरदारशहर), अणुव्रत पत्रिका के संपादक महेन्द्रजी कर्णावट (राजसमन्द), अणुव्रत महासमिति के अध्यक्ष निर्मलजी रांका (बगड़ी) भी वहां उपस्थित हुए। उस दिन अणुव्रत के कार्यकर्ताओं की दिन में भी गोष्ठी हुई थी। रात्रि के समय भी कुछ अणुव्रत के बारे में बात चली। अणुव्रत महासमिति के कार्यकर्ताओं को आचार्यवर ने फरमाया कि उन्हें अणुव्रत न्यास के अनुदान पर निर्भर नहीं रहना चाहिए।

रात्रि एक : शयन स्थल अनेक

कुछ समय बाद पूज्यश्री शयन के लिए श्री समवसरण में मंच के परिपार्श्व में पधारे। सामान्यतया पूज्यश्री उन दिनों रात्रि में वहीं शयन करते थे। मैं पूर्वी हॉल में सोया करता था। द्वितीय वैशाख कृष्णा दशमी की रात्रि में आंधी आई। थोड़ी वर्षा भी हुई। आंधी व वर्षा के कारण स्थान बदलने की अपेक्षा हो रही थी। गुरुदेव के शयन के लिए दूसरा विकल्प वही हॉल था, जहां मैं सो रहा था। प्राप्त जानकारी के अनुसार मुनि विश्रुतकुमारजी (जसोल) ने पूज्यवर को हॉल में पधारने के लिए निवेदन किया, तब गुरुदेव ने फरमाया – हॉल में महाश्रमण सो रहे हैं, वहां नहीं जाएंगे। पूज्यश्री ने हॉल के बाहर शयन किया। वहां भी आंधी तेज लगी। दूसरा कोई विकल्प नहीं रहा, तब पूज्यश्री पूर्वी हॉल में पधारे और वहां शयन किया। मैं और मेरे पास सोने वाले सन्त हॉल के अन्दर उत्तर दिशा में स्थित कमरे में चले गए।

पश्चिम रात्रि

पश्चिम रात्रि में लगभग चार बजे पूज्यश्री विराजमान हुए। एक धागे में रुद्राक्ष के पांच मनके पिरोए हुए थे और दूसरे धागे में रुद्राक्ष के सात मनके पिरोए हुए थे। उन दोनों धागों में स्थित मनकों को पूज्यवर ने गले में धारण किया। ध्यान की मुद्रा में लीन हो गए। लगभग आधा घण्टा पश्चात् ध्यान का प्रयोग संपन्न हुआ।

साढ़े चार बजे पूज्यप्रवर ने सुप्त कायोत्सर्ग का प्रयोग प्रारम्भ किया। बीस मिनट तक सुप्त कायोत्सर्ग का प्रयोग किया। चार बजकर पचास मिनट पर सामूहिक अर्हत्-वन्दना के लिए आमंत्रण सूचक शब्द हुआ। मैं और मुनिजन पूज्यप्रवर की सन्निधि में उपस्थित हुए। अर्हत्-वन्दना से पूर्व प्रतिदिन

श्रीमज्जयाचार्य द्वारा रचित चौबीसी के एक स्तुति गीत का क्रमशः संगान हुआ करता है। आज सुविधि प्रभु के स्तुति गीत का सस्वर संगान किया गया, जिसका प्रथम पद्य है –

सुविधि करि भजियै सदा, सुविधि जिनेश्वर स्वामी हो।
पुष्पदंत नाम दूसरो, प्रभु अंतरयामी हो।।१।।

इस स्तुति गीत के पश्चात् लोगस्स के इस पद का जप हुआ –

आरोग्ग-बोहिलाभं, समाहिवरमुत्तमं दिंतु।
चंदेसु निम्मलयरा, आइच्चेसु अहियं पयासयरा।
सागरवरगंभीरा, सिद्धा सिद्धिं मम दिसंतु।।

तत्पश्चात् अर्हत्-वन्दना हुई। प्रतिक्रमण के लिए कुछ समय शेष था। उस समय का उपयोग हमने गुरुदेव तुलसी की एक गीतिका 'मतिमंत मुणी' के संगान में किया। उसकी संपन्नता के बाद मुनिजनों ने लेखपत्र का उच्चारण किया। हमने गुरुवंदना की। मुनिवृंद ने रात्रिकालीन चर्या की विशुद्धि के लिए आलोचना मांगी। पूज्य गुरुदेव की निश्रा में मैंने सन्तों को आलोचना दी। मुनि अक्षयप्रकाशजी (अहमदाबाद) ने गुरुदेव को प्रतिक्रमण सुनाया। मैंने श्रावक समाज की उपस्थिति में संतों के साथ बाहर प्रतिक्रमण किया। लगभग छह बजे मुनि जयकुमारजी ने तौलिए से गुरुदेव के शरीर की मालिश की। आचार्यवर ने फरमाया – आज पूर्व रात्रि में तूफान बहुत तेज आया, सारा शरीर रजकणों से भर गया।

मुनि जयकुमारजी – आचार्यवर! स्वास्थ्य कैसे है?

आचार्यवर – स्वास्थ्य रात को ठीक रहा, पर यह जलन की समस्या नई हो गई। पहले कभी ऐसी समस्या नहीं हुई।

पूज्यप्रवर के वस्त्र-प्रतिलेखन का कार्य मुनिश्री राजेन्द्रकुमारजी स्वामी (हांसी) किया करते थे। प्रतिदिन की भांति उस दिन भी मुनिश्री आचार्यवर के वस्त्रों का प्रतिलेखन करने के लिए आए। पूज्यप्रवर को वन्दना की, आलोचना ली, फिर सुखपृच्छा करते हुए निवेदन किया – रात्रि में आंधी का परीषह रहा, काफी कठिनाई रही होगी?

आचार्यवर (मुस्कुराते हुए) – प्रकृति है, चलता ही रहता है। कल रात को आंधी ने कुछ ज्यादा ही अपना रौद्र रूप दिखाया। स्थान भी बदलना पड़ा।

मुनिश्री – शरीर पर भी असर हुआ होगा ?

आचार्यवर – सारा शरीर रजकणों से भर गया। सफाई करनी होगी। वैसे तो मुनि जयकुमार ने तौलिए से प्रौंच्छन किया है, किन्तु गीले तौलिए से पौंछना होगा। तत्पश्चात् आचार्यवर ने करुणा बरसाते हुए कहा – तुम लोगों को भी कठिनाई रही होगी। मुनि दुलहराजजी (दूधोड़) को भीतर ले जाना या बाहर लाना काफी कठिन होता है।

मुनिश्री – आपश्री की कृपा से सब ठीक हो जाता है।

तत्पश्चात् प्रतिलेखन सूचक शब्द हुआ और मुनिश्री प्रतिलेखन करने लगे।

काम करते जाओ

मुनि जयन्तकुमारजी (गंगाशहर) सन् १९९९ के दिल्ली चतुर्मास से पूज्यवर के वस्त्र-प्रतिलेखन-कार्य में मुनिश्री राजेन्द्रकुमारजी स्वामी का सहयोग करने लगे। सन् २००६ के भिवानी चतुर्मास से पूर्व हिसार में पूज्यश्री ने मुनि जयन्तकुमारजी को प्रतिलेखन में सहयोग हेतु विधिवत् निर्देश दिया और मुनिश्री की अनुपस्थिति में प्रतिलेखन करने की सम्पूर्ण जिम्मेदारी सौंपी। वे ९ मई २०१० को भी प्रतिलेखन के समय पूज्यवर की सेवा में उपस्थित थे। उन्होंने निवेदन किया – पूज्यपाद! मैंने आपके जन्म-दिवस पर उपहार समर्पित करने का मानस बनाया है। वह उपहार है आपश्री की दो नवीन कृतियां। इन पुस्तकों में वे आलेख लिए गए हैं, जो किसी न किसी माध्यम से मीडिया वालों तक पहुंचे हैं। प्रथम पुस्तक का नाम 'जो सहता है वही रहता है' निश्चित किया है और दूसरी का 'कैसे हो समाधान' नाम रखने का विचार है, परन्तु इन पुस्तकों के प्रकाशन में कुछ रुकावटें आ रही हैं। इस संदर्भ में मार्गदर्शन चाहता हूं। पूज्यवर ने फरमाया – पुस्तकों के शीर्षक बहुत अच्छे हैं। इस परिकल्पना से लगता है कि पुस्तकें कुछ नए ढंग से आएंगी। यह अच्छा काम है। इससे तुम्हारा भी विकास होगा। रूकावटों की चिन्ता मत करो। काम करते जाओ, रुकावटें अपने आप समाप्त हो जाएंगी। आचार्यवर का आशीर्वाद प्राप्त कर मुनि जयन्तकुमारजी का मन आश्वस्त हुआ।

दुलहराजजी ! कैसे, ठीक है ?

मैंने उपस्थित लोगों को बृहद् मंगलपाठ सुनाया और उनकी धारणा के अनुसार एक दिन के लिए एक संकल्प कराया। तत्पश्चात् पूज्यप्रवर मंच पर पधारे और कुर्सी पर पूर्वाभिमुख विराजे। यह वही स्थान है, जहां पिछले वर्षों में आचार्यों का प्रवचन होता रहा है और जहां मेरी और मुनिश्री उदितकुमारजी स्वामी (सरदारशहर) की दीक्षा हुई थी। फिर आगममनीषी मुनिश्री दुलहराजजी स्वामी पूज्यवर के दर्शनार्थ पधारे। मैंने मुनिश्री को वंदना की। मुनिश्री लगभग छह दशक तक आचार्यवर की उपासना में रहे, बहुत निष्ठा के साथ सेवा की। आचार्यवर के साहित्य-संपादन एवं आगम-संपादन आदि कार्यों में उनका अच्छा योगदान रहा। मुनिश्री को देखते हुए प्रसन्न मन से आचार्यवर ने पूछा – दुलहराजजी ! कैसे, ठीक है ? रात्रि में गर्मी तो नहीं रही ?

मुनिश्री – सामान्यतया ठीक ही रहा। आचार्यवर के कैसे है ? रात में आंधी आई थी।

आचार्यश्री – तुम्हारा स्थान ठीक है, बार-बार आना जाना नहीं पड़ता।

मुनि जितेन्द्रकुमारजी (रासीसर) – आचार्यश्री को मेहनत पड़ती है। गोठी-भवन से यहां पधारना पड़ता है। परसों रात में भी आचार्यश्री को काफी कष्ट पड़ा।

आचार्यश्री – कष्ट तो नहीं, किन्तु आना जाना हो जाता है।

पानी उपभोग का संयम करो

सूर्योदय के बाद साध्वीप्रमुखाश्री कनकप्रभाजी आदि साध्वियां दर्शन करने आईं। मैं आचार्यवर के पास उत्तराभिमुख बैठा। एक प्रसंग चला। श्री समवसरण में कुछ बैनर लगे हुए थे। उनमें से एक बैनर पर लिखा हुआ था – पानी बचाओ। मैंने प्रश्न किया – 'पानी बचाओ' कहना चाहिए या 'पानी के उपभोग का संयम करो' यह कहना चाहिए ?

आचार्यश्री ने कहा – मुख्यमंत्री आदि की लोकभाषा में 'पानी बचाओ' चलता है।

मैंने कहा – साधु की भाषा ऐसी हो सकती है क्या ?

तब फरमाया – साधु की भाषा तो 'पानी के उपभोग का संयम करो' यह होनी

चाहिए। मैंने इस चर्चा का यथास्मृति भाव बताने का प्रयास किया है। तात्त्विक बातचीत में गुरुदेव के साथ यह मेरी अन्तिम वार्ता थी।

स्थान स्वच्छ, पट्ट पर रजकण

साध्वीप्रमुखा कनकप्रभाजी आदि साध्वियां वंदना कर लौट गईं। परम पूज्यश्री मेरा हस्तावलंब लेकर गोठीजी की हवेली में पधारे। वहां पंचमी समिति आदि आवश्यक कार्य से निवृत्त होकर टहलने लगे। हवेली के स्थान को साताकारी बताते हुए फरमाया — यह स्थान खुला है, स्वच्छ है। सामने आकाश दिखाई देता है। मन प्रसन्न हो जाता है। फिर पूज्यप्रवर ने पूछा — जो नया भवन बना है, उसमें कैसा स्थान है ? मुनि जयकुमारजी ने नए भवन के संदर्भ में अवगति दी। कुछ देर घूमने के पश्चात् पूज्यश्री पट्ट पर विराजे। पट्ट के किनारों को देखते हुए फरमाया — पट्ट पर रजकण कैसे हैं ? बाजोट के काम वालों ने क्या इसे साफ नहीं किया ? बालमुनि लब्धिकुमारजी (सूरत) ने निवेदन किया — साफ तो किया था, पर रजकण वापस आ गए। मैं इन्हें साफ कर देता हूं।

पूज्यश्री ने आयुर्वेदिक औषध (शिलाजीत, अभ्रक-भस्म और मुक्तापिष्टी) का शहद के साथ आसेवन किया और औषध-सेवन के पश्चात् कुछ आसन किए, जैसे — हाथ की क्रियाएं, मुंह और गले की क्रियाए, पीठ के बल लेटकर पैरों को साइकिल की तरह चलाना, घुटनों को मोड़कर कमर के भाग को नीचे की ओर दबाना। विराजमान होकर अन्तः कुम्भक और मूलबन्ध का प्रयोग किया। फिर भस्त्रिका प्राणायाम किया। तत्पश्चात् कायोत्सर्ग किया।

जीवनस्पर्शी संबोध

उस समय अनेक बालमुनि मुनि अनुशासनकुमारजी (कोशीवाड़ा), मुनि सुधांशुकुमारजी (बिरमावल), मुनि लब्धिकुमारजी, मुनि हेमन्तकुमारजी (असाढ़ा), मुनि हितेन्द्रकुमारजी (सायरा) आचार्यवर के उपपात में आसीन थे। वे परस्पर बतियाते हुए किसी विषय पर हंस पड़े। उनका हास्य कुछ क्षणों तक चलता रहा। आचार्यवर का ध्यान उस ओर केन्द्रित हुआ। बाल साधुओं की ओर उन्मुख होकर पूज्यश्री ने पूछा — कौन हंस रहा है ? बालसाधु (कुछ ग्लानि महसूस करते हुए) — तहत्।

आचार्यवर – जो गंवार होता है, वह हंसता है। क्या तुम्हें गंवार बनना है ?

बालसाधु – नहीं।

आचार्यवर – पूज्य कालूगणी एक दोहा फरमाया करते थे –

हंसिए ना हुंसियार, हंसिया हळकाई हुवै।
हंसिया दोष हजार, गुण जावै गहलो बजै ।।

बालमुनि (विनत भाव से भूल स्वीकार करते हुए) – गुरुदेव ! अब ध्यान रखने का भाव है। आचार्यवर के इस उद्‌बोधन में एक जीवनस्पर्शी संबोध था।

शिष्यों के साथ संवाद

मुनि हितेन्द्रकुमारजी गुरुदेव की सेवा में आए और निवेदन किया – गोचरी जाने की आज्ञा है।

आचार्यवर – क्या अकेले जा रहे हो ?

मुनि हितेन्द्रकुमारजी – मैं मुनि जयकुमारजी स्वामी के साथ जा रहा हूं।

आचार्यवर – तब ठीक है, जाओ।

आचार्यवर ने आसन-प्राणायाम के बाद कायोत्सर्ग किया।

मुनि जयकुमारजी गोचरी लेकर आए, आचार्यवर को गोचरी निवेदित की। आचार्यवर ने फरमाया – अनेक ज्योतिषियों ने स्वास्थ्य आदि के बारे में जो कहा है, उन्हें एक जगह एकत्रित कर लेते हैं। बीदासर वाले पंडित बजरंगजी, बिहारवाले ज्योतिषी मोहन माधुर्य तथा बीकानेर वाले चिरंजीलालजी राजपुरोहितजी का इन दिनों के लिए कुछ ऐसे ही लिखे हुए कागज थे, वे कहां हैं ?

मुनि जयकुमारजी – गुरुदेव ! वे शायद आपश्री की डायरियों में ही हैं।

आचार्यवर – ठीक है। उन्हें देखना है।

साध्वी सुप्रभाजी (श्रीडूंगरगढ़) गोघृत लेकर आई। आचार्यवर उन दिनों प्रतिदिन नाक में घी की एक-दो बूंद डलवाते थे। मुनि जयकुमारजी ने घी की बूंदें नाक में डालीं। आचार्यवर ने घी की बूंदों को ऊपर की ओर खींचा। पूज्यश्री नाक और मस्तिष्क की दृष्टि से इसे बहुत उपयोगी मानते थे। उस समय अनेक संत प्रातःकालीन गोचरी लेकर पूज्यवर की सेवा में उपस्थित हुए। भिक्षा में आनीत

वस्तुएं पूज्यवर को निवेदित कीं। आचार्यवर सबके भिक्षा-पात्रों को ध्यान से देख रहे थे। मुनि आकाशकुमारजी (कटक) के भिक्षा-पात्र में अत्यल्प खाद्य सामग्री थी।

आचार्यवर ने पूछा — पात्रियां खाली कैसे हैं? क्या प्रातराश पर्याप्त नहीं आया?

मुनि आकाशकुमारजी — गुरुदेव! मैं दो-तीन किलोमीटर घूम कर आ गया, पर मेरे गोचरी के घर नहीं मिले। पास में जो एक-दो गोचरी के घर थे, उनमें से कुछ गोचरी की।

वे झोली लेकर अपने कक्ष में चले गए। लगभग सात बजकर तीस मिनट पर मुख्य नियोजिका साध्वी विश्रुतविभाजी (लाडनूं) एवं साध्वी तन्मयप्रभाजी (पीपाड़ सिटी) पूज्य गुरुदेव की सन्निधि में उपस्थित हुईं। प्रतिदिन इसी समय प्रातराश से पूर्व पूज्य गुरुदेव की उपासना में उपस्थित होना उनकी दिनचर्या का एक अंग जैसा बना हुआ था। साध्वी शुभ्रयशाजी (बीदासर) एवं साध्वी शीलयशाजी (सांडवा) गोचरी तथा साध्वी सुप्रभाजी अपनी सहवर्तिनी साध्वी मनीषाश्रीजी (चाड़वास) के साथ अपेक्षित औषध आदि लेकर गुरु-सन्निधि में आईं।

आचार्यवर ने प्रसन्नमुद्रा में मुख्य नियोजिकाजी से पूछा — क्या गोचरी आ गई?

मुख्य नियोजिकाजी — तहत्।

आचार्यवर प्रातराश के स्थल पर पधारे। वहां कुर्सी पर विराजे। मुनिश्री सुमेरमलजी स्वामी 'सुदर्शन' (सुजानगढ़), मुनि धनंजयकुमारजी (श्रीडूंगरगढ़), मुनि जयकुमारजी तथा बाल संत वहां पहले ही पहुंच चुके थे। आचार्यवर ने पानी से हाथ धोए। समुच्चय में उस दिन प्रातराश करने वाले बालमुनियों के नाम इस प्रकार हैं — मुनि गौतमकुमारजी (बिरमावल), मुनि सुधांशुकुमारजी, मुनि अनुशासनकुमारजी, मुनि मृदुकुमारजी (कोशीवाड़ा), मुनि लब्धिकुमारजी, मुनि गौरवकुमारजी (लाडनूं), मुनि हितेन्द्रकुमारजी, मुनि हेमन्तकुमारजी।

मुख्य नियोजिकाजी ने चोकर के बिस्कुट, छेना, आंवले का मुरब्बा आदि खाद्य पदार्थ पूज्य गुरुदेव के सामने स्थित टेबल पर रखे। पूज्यवर ने उकाली के साथ सितोपलादि चूर्ण लिया। शतावरी, शंखपुष्पी चूर्ण एवं मिश्री को दूध में मिलाकर पीया। फिर मुनि जयकुमारजी ने पूज्यप्रवर को लीकर (विशेष प्रकार की पत्ती का उबला हुआ पानी) लेने के लिए निवेदन किया। ज्ञातव्य है कि पिछले ३-४ दिनों से सुमतिचन्दजी गोठी (सरदारशहर) के निवेदन पर आचार्यवर लीकर का प्रयोग करते थे, किन्तु इन दिनों दोनों पसलियों में जलन कुछ ज्यादा हो रही थी, इसलिए उस दिन पूज्यवर ने लीकर लेने के लिए मना फरमा दिया। आचार्यवर को महसूस हुआ कि शायद लीकर पीने से जलन कुछ बढ़ रही है।

करुणा का निदर्शन

आचार्यवर ने प्रातराश के मध्य फरमाया – आज मुनि आकाशजी के नाश्ता पूरा नहीं आया, उन्हें बुलाओ। जितना जरूरत है, यहां से ले लेंगे।

मुनि धनंजयकुमारजी – गुरुदेव! कुछ लोग गोचरी की भावना भा रहे थे। हमने उनका व्रत निपजा दिया, गोचरी पूरी आ गई। ज्ञातव्य है कि मुनि आकाशकुमारजी मुनि धनंजयकुमारजी के सहवर्ती संत हैं।

आचार्यवर (मुनि धनंजयकुमारजी की ओर अभिमुख होकर) – तुम संकोच कर रहे हो, आकाशजी को बुलाओ।

मुख्य नियोजिकाजी – मुनिश्री! आचार्यवर की मर्जी है तो एक बार आकाश मुनि को बुला लें।

गुरुदेव याद फरमा रहे हैं, यह सूचना मिलते ही मुनि आकाशकुमारजी तत्काल गुरुचरणों में उपस्थित हो गए। आचार्यवर ने स्नेहिल दृष्टि से देखते हुए वात्सल्य भरे स्वर में फरमाया – आज तुम्हारी गोचरी में कम आया था। जितना चाहिए, यहां से ले लो।

मुनि आकाशकुमारजी – नहीं गुरुदेव! अब अपेक्षा नहीं है।

पूज्यप्रवर – आओ, हम तुम्हें देते हैं, यह कहते हुए गोचरी में आई हुई अनेक वस्तुएं उनको प्रदान कीं।

मुनि आकाशकुमारजी गुरु के इस अयाचित अनुग्रह से भावविभोर हो गए। करुणा

और वात्सल्य भरा यह अनुग्रह गुरु की गुरुता का साक्षात् निदर्शन था।

प्रातराश : अनेकों को मिले ग्रास

हमारे धर्मसंघ की व्यवस्था में आचार्यों की भांति युवाचार्य के लिए भी साध्वियां गोचरी लाती हैं। उस समय मैं युवाचार्य था। आचार्य के लिए जो गोचरी आती, उसी में मेरी गोचरी आती थी। मेरी परिचर्या में रहने वाले मुनि कुमारश्रमणजी गुरुदेव के पास मेरे लिए प्रातराश लाने गए। मुख्य नियोजिकाजी ने एक पात्र में दूध, एक पात्र में बिस्कुट आदि रखे।

आचार्यवर ने पूछा – आंवले का मुरब्बा रखा या नहीं?

मुख्य नियोजिकाजी – तहत्, रखा है।

आचार्यवर – तब ठीक है।

मुख्य नियोजिकाजी – आचार्यवर! आज गोचरी में पिस्ते की चक्की आई है। गुरुदेव फरमाएं तो इसे युवाचार्यवर के लिए पात्री में रख दूं?

आचार्यवर – रख दो। यह तो अच्छी ही है।

मेरा स्वास्थ्य ठीक रहे, इस दृष्टि से आचार्यवर स्वयं जागरूक रहते थे। आचार्यवर ने तत्रस्थ सभी संतों एवं साध्वियों को ग्रास बख्साए। मुनि गौरवकुमारजी को बादाम का ग्रास बख्साया। मुनि मुदितकुमारजी (बीदासर) को आम की फांक बख्सायी। उन्होंने मुनिश्री किशनलालजी स्वामी (मोमासर) को उसे (आम की फांक) लेने की मनुहार की।

आचार्यवर ने कहा – किशनलालजी को तुम क्यों दे रहे हो? हम उन्हें स्वयं देंगे। यह कहते हुए आचार्यवर ने मुनिश्री को आम की फांक का ग्रास दिया।

प्रातराश के अंत में आचार्यवर प्रायः सात भीगी हुई मुनक्का एवं दो अंजीर का आसेवन करते। आचार्यवर ने मुख्य नियोजिकाजी को मुनक्का का ग्रास बख्साया और उनके पात्र में आंवले का मुरब्बा आदि पदार्थ भी रखे। आचार्यवर ने आज एक ही अंजीर खाई। दूसरी अंजीर एवं कुछ बादाम मुनि धनंजयकुमारजी को यह कहते हुए बख्साए कि धनंजयजी दिमाग का श्रम बहुत करते हैं। इनके लिए ये बहुत आवश्यक हैं। मुनि सुमेरमलजी 'सुदर्शन' को छेना बख्साया। मुनि

जयकुमारजी को पात्र में अवशिष्ट प्रातराश की सामग्री प्रदान की। प्रातराश के अनंतर हस्त एवं मुख प्रक्षालन कर आचार्यवर खड़े हुए। आचार्यवर प्रातराश के पश्चात् प्रतिदिन दो लवंग लेते थे। मुनि सुधांशुकुमारजी ने आचार्यवर के हाथ में लवंग रखे। आचार्यवर ने उन्हें ग्रहण किया। संतों का हस्तावलंब लेकर पुनः पट्ट पर विराज गए।

दायित्व महासभा का

मुख्य नियोजिकाजी प्रातराश कर आचार्यवर की उपासना में आसीन हुईं।

मुख्य नियोजिकाजी – आज कुलपति समणी मंगलप्रज्ञाजी (मोमासर) आई हैं। क्या आचार्यवर के दर्शन कर लिए ?

आचार्यश्री – हां, वह अभी क्यों आई है ?

मुख्य नियोजिकाजी – कालू कन्या महाविद्यालय के काम से आई हैं।

आचार्यश्री – वह तो सारा तय हो गया। जैन श्वेताम्बर तेरापंथी महासभा इस कार्य को संभालेगी।

मुख्य नियोजिकाजी – अभी भी वे इस विषय में असंदिग्ध नहीं हैं। उनके मन में प्रश्न है कि कैसे कार्य होगा ?

आचार्यश्री – महासभा को कार्य का दायित्व मिलेगा तो वह अपनी जिम्मेदारी स्वयं संभाल लेगी।

मुख्य नियोजिकाजी – वे आचार्यवर की सेवा करेंगी, तब पूरी बात समझ लेंगी।

आचार्यवर – अभी अनुष्ठान का समय हो गया है। पहले अनुष्ठान कर लें।

आध्यात्मिक अनुष्ठान

सन् २००८ के जयपुर-प्रवास से प्रायः प्रतिदिन जप-अनुष्ठान का क्रम नियमित चल रहा था। मुख्य नियोजिकाजी, मुनि दिनेशकुमारजी (टापरा), मुनि जयकुमारजी, अनेक बाल संत तथा तत्रस्थ साध्वी-समणियां उस अनुष्ठान में संभागी बनते। यह अनुष्ठान मंत्र-जप, ग्रह, चैतन्य केन्द्र और रंगों के साथ जुड़ा

हुआ था। प्रतिदिन राहु, केतु, मंगल, सूर्य, शनि — इन पांच ग्रहों के लिए निर्दिष्ट मंत्र का जप होता। इस अनुष्ठान का स्वरूप इस प्रकार रहता —

ग्रह	**चैतन्य केन्द्र**	**रंग**	**मंत्र**
शनि	शक्ति केन्द्र	नीला रंग	ॐ ह्रीं णमो लोए सव्वसाहूणं
राहु	शक्ति केन्द्र	नीला रंग	ॐ ह्रीं णमो लोए सव्वसाहूणं
केतु	शक्ति केन्द्र	नीला रंग	ॐ ह्रीं णमो लोए सव्वसाहूणं
मंगल	आनन्द केन्द्र	अरुण रंग	ॐ ह्रीं णमो सिद्धाणं
सूर्य	तैजस केन्द्र	अरुण रंग	ॐ ह्रीं णमो सिद्धाणं

इसके अतिरिक्त जिस दिन जो बार होता, उसकी विशुद्धि के लिए जप किया जाता। आचार्यवर के साथ साधु-साध्वियों ने तन्मयता से जप किया। जप की संपन्नता के साथ आचार्यवर ने घड़ी की ओर दृष्टिपात किया, फरमाया — आजकल समय रहता है। आज से पुनः भक्तामर का पाठ शुरू करो। पांच अथवा सात श्लोक का प्रतिदिन स्वाध्याय चले। आचार्यवर के इस इंगित के साथ ही भक्तामर के प्रथम सात श्लोकों का सस्वर पाठ किया गया। ज्ञातव्य है कि सन् २००८ के जयपुर प्रवास से प्रायः प्रतिदिन भक्तामर के पांच अथवा सात श्लोकों का उच्चारण किया जाता था। कभी-कभी कालक्षेप भी हो जाता था। फिर आचार्यश्री ने बालमुनि हितेन्द्रकुमारजी से कहा — अलमारी से संबोधि की पुस्तक लाओ। बालमुनि ने वह पुस्तक आचार्यवर के कर कमलों में प्रस्तुत कर दी। आचार्यवर ने दो-तीन मिनट पुस्तक का अवलोकन किया। आज जिन श्लोकों पर प्रवचन करना था, उनका डायरी में संकेत किया।

स्वास्थ्य का परीक्षण

वैद्य मुन्नालालजी सेठिया (सरदारशहर, बाग वाले) इन दिनों प्रतिदिन आचार्यवर के स्वास्थ्य एवं नाड़ी का परीक्षण कर रहे थे। उन्होंने आज भी नाड़ी का परीक्षण किया, नाड़ी देखकर कहा — आचार्यवर! कल की अपेक्षा आज नब्ज काफी ठीक है। श्वास की गति भी स्वाभाविक है। आपको कैसे लग रहा है? आचार्यवर ने कहा — आज मेरा स्वास्थ्य बहुत ठीक है। कफ भी कम है, पित्त भी शान्त है और वायु की समस्या भी नहीं है। मुझे बहुत हल्कापन महसूस हो रहा है।

श्री सेठियाजी ने यह सुनकर संतोष और आनंद का अनुभव किया। वैद्य मुन्नालालजी ने अपने संस्मरण में नाड़ी-परीक्षण एवं आकृति निरीक्षण के संदर्भ में लिखा — नब्ज कल की अपेक्षा आज काफी ठीक थी। श्वास की गति स्वाभाविक थी। मुख पर, आंखों में वही प्रसन्नता, वही गांभीर्य, वही स्थिरता, निश्चिन्तता और दृढ़ विश्वास झलक रहा था। उनकी विचार शक्ति पूर्णरूपेण ठीक थी।

प्रेक्षाध्यान : दर्शन और प्रयोग पुस्तक का आलेखन

आचार्यवर प्रातराश के पश्चात् इन दिनों 'प्रेक्षाध्यान : दर्शन एवं प्रयोग' पर एक मौलिक पुस्तक का आलेखन करवा रहे थे। गुरुदेव फरमाते जाते और मुख्य नियोजिकाजी उसका श्रुतलेखन करतीं। आचार्यवर ने आज लगभग आधा घंटा आलेखन करवाया।

आचार्यवर ने कहा — आज रविवार है। आगम कार्य का अवकाश है। तुम्हारे लेखन का कार्य पहले करवा दें।

मुख्य नियोजिकाजी — तहत् गुरुदेव, यह कहते हुए मुख्य नियोजिकाजी डायरी-पेन हाथ में लेकर लिखने के लिए तत्पर बन गईं।

आचार्यवर — 'प्रेक्षाध्यान : प्रयोग-पद्धति' पुस्तक में लेश्याध्यान का प्रयोग व्यवस्थित नहीं है। तुम नया लिखो।

आचार्यवर ने लेश्याध्यान का एक प्रयोग (आनन्द केन्द्र पर हरे रंग का ध्यान) पूरा लिपिबद्ध कराया, फिर कहा — इसी क्रम से अवशिष्ट प्रयोग तुम स्वतः लिख लेना।

मुख्य नियोजिकाजी — तहत् गुरुदेव!

आचार्यवर — देखो, हमने इस पुस्तक का काम प्रायः पूरा कर दिया है। सिर्फ अनुप्रेक्षा का प्रयोग शेष रहा है। (अनुप्रेक्षा के प्रयोग स्वयं आचार्यवर द्वारा पहले ही लिखाए जा चुके थे) उसे तुम ले लेना।

आठ बजकर चालीस मिनट पर लाडनूं तेरापंथ सभा के चुनाव के संदर्भ में कुछ संवाद प्राप्त हुए। मेरे निर्देशानुसार मुनि धनंजयकुमारजी और मुनि कुमारश्रमणजी ने संवादों की अवगति गुरुदेव को दी। इस विषय में मेरा मंतव्य भी निवेदित किया। आचार्यवर ने उसे उपयुक्त मानते हुए तदनुरूप निर्देश दिया।

ज्ञान के प्रति आकर्षण

मुख्य नियोजिकाजी ने निवेदन किया — आचार्यवर! अब हम अपने ठिकाने (प्रवास-स्थल) जाएं?

आचार्यवर — हां, जा सकती हो।

मुख्य नियोजिकाजी विनयपूर्वक वंदना कर उठने का उपक्रम करने लगीं, आचार्यवर ने स्नेहिल स्वर में फरमाया — जब तुम समणी स्मितप्रज्ञा थी, तब तुम्हारी कुछ चिन्ता रहती थी। उस समय तुम साधना करती थी, पर ज्ञान के प्रति रुझान नहीं था। जब साध्वी विश्रुतविभा बनी, तब ज्ञान के प्रति तुम्हारा आकर्षण बढ़ गया। मुख्य नियोजिका बनने के बाद तो तुम मुझे खाली रहने ही नहीं देती हो। मुख्य नियोजिकाजी ने आचार्यवर के इन अनुग्रह-पूरित शब्दों को उपहार एवं अहोभाव के रूप में स्वीकार करते हुए कहा — यह सब गुरुदेव का ही प्रताप है।

व्यापक बन रहा है जैनदर्शन

आठ बजकर पैंतालीस मिनट पर समणी मंगलप्रज्ञाजी और समणी चैतन्यप्रज्ञाजी (झाबुआ) पूज्यवर की सन्निधि में उपस्थित हुईं। आचार्यवर ने अंतर्राष्ट्रीय क्षेत्र में संपन्न कुछ कार्यों को महत्त्वपूर्ण बताते हुए कहा — अब भगवान् महावीर की बात विदेशी विद्वानों के पास पहुंच रही है। फ्लोरिडा इंटरनेशनल युनिवर्सिटी में तीर्थंकर महावीर प्रोफेसरशिप का कार्य बहुत अच्छा हो गया। गेन्ट युनिवर्सिटी, बेल्जियम के साथ शैक्षणिक अनुबंध (एम. ओ. यू.) होना भी बहुत महत्त्वपूर्ण है। पहले वहां के लोग महात्मा गांधी की अहिंसा को जानते थे। अब उन्हें यह तथ्य ज्ञात हो रहा है कि महात्मा गांधी भगवान् महावीर के अहिंसा-दर्शन से प्रभावित थे।

समणी मंगलप्रज्ञाजी — यह पूज्यवर की दूरदृष्टि का ही परिणाम है कि अब विदेशों में जैनधर्म व्यापक हो रहा है।

आचार्यवर — आचार्य तुलसी का जो स्वप्न था, वह साकार हो रहा है।

समणी मंगलप्रज्ञाजी — भारत सरकार 'दर्शन विश्वकोष' का प्रकाशन कर रही है। उसमें देने वाले लेख तैयार हो गए?

आचार्यवर — मुनि महेन्द्रजी ने एक बड़ा लेख तैयार किया है, उसमें जैन

गणित, विज्ञान आदि के संदर्भ में अच्छी जानकारी है। दूसरे लेख भी तैयार हो रहे हैं, कुछ तैयार भी हो गए हैं, बाद में ले लेना।

समणी मंगलप्रज्ञाजी — वे शीघ्रता कर रहे हैं।

नोट : — समणी मंगलप्रज्ञाजी को तीन लेख दिए गए —

१. Anekantavada — आचार्य महाप्रज्ञ

२. Scientific Studies in Jainism — मुनि महेन्द्रकुमार

३. Jain Yaga Meditation, Lesya and gunasthanas — मुनि महेन्द्रकुमार

आचार्यवर — विश्वविद्यालय के संबंध में जो कानूनी सलाह लेनी थी, वह ले ली ?

समणी मंगलप्रज्ञाजी — दो-तीन व्यक्तियों से पूछा था, पर पूरी जानकारी अभी तक नहीं मिल पाई है। अब बसंतीलालजी बाबेल (लावा सरदारगढ़) को पूछा है। उन्होंने कहा है कि मैं देखकर बताऊंगा।

आचार्यवर — ठीक है।

समणी मंगलप्रज्ञाजी — क्या बाबेलजी को कानूनी सलाहकार (Legal Advisar) बनाया जा सकता है ?

आचार्यवर — वे बहुत उपयुक्त व्यक्ति हैं।

समणी मंगलप्रज्ञाजी ने विश्वविद्यालय के संदर्भ में कुछ सामयिक मार्गदर्शन भी प्राप्त किया। समणीजी ने निवेदन किया — मुख्य नियोजिकाजी पधार गए हैं। मुझे दो-तीन बातों पर और विमर्श करना था।

आचार्यवर — अभी तो वह चली गई है। दोपहर में आएगी तब.....।

चर्चा जैन आयुर्वेद की

आचार्यवर ने मुन्नालालजी सेठिया से पूछा — जो औषध ले रहा हूं, उसके निर्माण की प्रक्रिया क्या है? औषध में सम्मिलित पदार्थों का योग कहां निर्दिष्ट है ? मुन्नालालजी सेठिया ने औषध निर्माण की प्रक्रिया एवं औषध में सम्मिलित पदार्थों की अवगति दी। आचार्यवर ने इस संदर्भ में व्यवस्थित जानकारी के लिए 'आयुर्वेद सार-संग्रह' ग्रंथ मंगवाया। मुनि जयकुमारजी ने ग्रंथ

आचार्यवर के हाथ में थमाया। मुन्नालालजी सेठिया ने कहा – आचार्यवर! औषध-प्रयोग का यह नुस्खा इस ग्रंथ का नहीं है। यह 'रसतंत्रसार सिद्ध प्रयोग भाग-१' का है। पूज्यश्री ने 'जैन आयुर्वेद का इतिहास' ग्रंथ मुन्नालालजी को अपने हाथों से प्रदान किया और कहा – तुम इसका अध्ययन करो।

आचार्यवर (समणी मंगलप्रज्ञाजी की ओर उन्मुख होकर) – जैन विश्व भारती विश्वविद्यालय में आयुर्वेद का कुछ किया है या नहीं?

समणी मंगलप्रज्ञाजी – अभी तक तो कुछ नहीं हुआ है।

आचार्यवर – जैन आचार्यों ने आयुर्वेद पर बहुत लिखा है। उस पर बहुत काम हो सकता है। जैन आयुर्वेद का एक ग्रंथ है – कल्याणकारकम्। उसमें मद्य, मांस एवं शहद से रहित आयुर्वेद चिकित्सा का विधान है। एक महत्त्वपूर्ण जैन ग्रंथ है – पुष्प आयुर्वेद। उसमें सोलह हजार पुष्पों का वर्णन है। उसके आधार पर पुष्प चिकित्सा के विधान किए गए हैं। उस महत्त्वपूर्ण ग्रंथ की प्रति कर्नाटक में कहीं प्राप्त हो सकती है।

आचार्यवर (मुन्नालालजी सेठिया की ओर दृष्टिपात करते हुए) – आयुर्वेद के संदर्भ में जैन आचार्यों ने जो काम किया है, वह आयुर्वेद जगत् के सामने बहुत कम आ पाया है।

मुन्नालालजी – जैन आयुर्वेद के ग्रंथों की जानकारी भी व्यापक नहीं है।

आचार्यवर – देश में आयुर्वेद के क्षेत्र में अनुसंधान आदि बहुत कम हो रहे हैं, इसीलिए यह चिकित्सा-पद्धति उपयोगी, निरापद और लाभदायी होते हुए भी प्रतिष्ठित नहीं हो पा रही है। इस विषय में गंभीर चिन्तन करना चाहिए। राजस्थान पत्रिका के प्रबंध संपादक गुलाब कोठारी (जयपुर) की भी इस विषय में रुचि है। उसका भी सहयोग लेना चाहिए।

आचार्यवर (समणी मंगलप्रज्ञाजी की ओर देखते हुए) – लाडनूं में एक क्षुल्लकजी थे। उन्होंने आयुर्वेद के चार ग्रंथ प्रकाशित किए। उनमें आयुर्वेद चिकित्सा के बहुत नुस्खे थे। वे ग्रंथ जैन विश्व भारती के ग्रंथागार में देखना। यदि वहां नहीं हों तो दिगम्बर-मंदिर आदि से जानकारी प्राप्त की जा सकती है। वे ग्रंथ मिल जाएं तो मुन्नालालजी को दिखा सकती हो। ये अवलोकन और अध्ययन कर

जो सुझाव देंगे, उसके अनुसार कुछ कार्य हो सकता है।

समणी मंगलप्रज्ञाजी – तहत् गुरुदेव!

आचार्यवर – मुन्नालालजी को केवल आयुर्वेद की ही जानकारी नहीं है, साधना का भी अच्छा ज्ञान है।

मुन्नालालजी ने आचार्यवर से प्रसंगवश मंगलनिवास बाग (आचार्य महाप्रज्ञ दीक्षा स्थली) में घोषित दो दिवसीय प्रवास, जैन विश्व भारती द्वारा संचालित सेवाभावी आयुर्वेद रसायनशाला के संदर्भ में भी चर्चा की। मुन्नालालजी ने कृतज्ञता भरे स्वर में कहा – गुरुदेव! आज काफी समय हो गया। आपके असाता तो नहीं हुई?

आचार्यवर – नहीं। आज ठीक है। अभी प्रवचन का समय भी होने वाला है। दोपहर दो बजे दर्शन कर सकते हो।

मुन्नालालजी – मैं अवश्य उपस्थित हो जाऊंगा।

आशीर्वाद और प्रेरणा के प्रसंग

लगभग नौ बजे डॉ. जतनजी बैद (सरदारशहर) ने आचार्यवर के दर्शन किए। ब्लडप्रेशर आदि चैक किए। सब कुछ नार्मल था। कुछ दिन पूर्व आचार्यवर के पैर की अंगुली में ठोकर लगने से चमड़ी उतर गई। डॉ. जतनजी बैद वहां प्रतिदिन पट्टी करते थे। आज डॉ. जतनजी बैद ने बहुत शीघ्र पट्टी कर दी।

आचार्यवर – डॉक्टर साहब! आज बहुत जल्दी पट्टी कर दी।

डॉ. जतनजी बैद – आचार्यश्री! अब अंगुली ठीक हो गई है। उसी समय सरदारशहर के श्रद्धानिष्ठ श्रावक श्री हनुमानमलजी दूगड़ 'जौहरी' एवं उनकी धर्मपत्नी श्रीमती गिन्नीदेवी ने सपरिवार दर्शन किए। उन्होंने निवेदन किया – गुरुदेव! आज हम मुंबई जा रहे हैं। आचार्यवर ने प्रसन्नमना आशीर्वाद प्रदान किया, मंगलपाठ सुनाया।

अणुव्रत महासमिति के अध्यक्ष श्री निर्मलजी रांका ने मुंबई निवासी अपने मित्र श्री यतीश भाई द्वारा संपादित 'दर्शन यात्रा' पुस्तक उपहृत की। इसमें चौबीस तीर्थंकरों के नयनाभिराम और भव्य चित्र हैं। आचार्यवर ने पुस्तक स्वीकार करते हुए कहा – पुस्तक बहुत कलात्मक बनाई है। आचार्यवर ने प्रायः प्रत्येक पृष्ठ पर

अंकित तीर्थंकरों के चित्रों का अवलोकन किया।

लगभग सवा नौ बजे सरदारशहर निवासी एवं अहमदाबाद प्रवासी श्री अरविन्दजी दूगड़ पूज्यवर की सान्निधि में सामायिक कर रहे थे। आचार्यवर ने उनके पिता स्व. गणेशमलजी दूगड़ की शासनसेवा का विशेष उल्लेख करते हुए कहा – दूगड़ परिवार शासनसेवा में अग्रणी रहा है। श्री स्वरूपचंदजी, शुभकरणजी और गणेशमलजी – तीनों भाइयों ने धर्मसंघ को अपनी सेवाएं दी हैं। पूज्यप्रवर ने श्री अरविन्दजी दूगड़ को जैनधर्म का प्रवक्ता बनने की अभिप्रेरणा दी और सामयिक व कुछ जीवनोपयोगी शिक्षाएं भी प्रदान कीं।

नौ बजकर बीस मिनट पर मुनिश्री किशनलालजी स्वामी ने आचार्यवर से निवेदन किया – आचार्यवर! इस वर्ष विदेशी छात्रों का जीवन विज्ञान शिविर दिसम्बर मास में रखना चाहते हैं। कुछ कॉलेज के छात्रों की मौखिक सहमति भी मिल चुकी है। समणी चारित्रप्रज्ञाजी (चेन्नई) से बात करनी है कि क्या फ्लोरिडा इंटरनेशनल युनिवर्सिटी के छात्र आ सकते हैं? पूज्यवर की अनुमति से मुनिश्री किशनलालजी स्वामी इस संदर्भ में समणी चारित्रप्रज्ञाजी से खड़े-खड़े बात करने लगे। आचार्यवर ने फरमाया – लूंकार ले आओ, आराम से बात कर लो। आचार्यवर के वात्सल्यपूरित निर्देश के प्रति मुनिश्री ने कृतज्ञता व्यक्त की। वार्तालाप के पश्चात् मुनिश्री ने आचार्यवर के प्रबंधन कौशल को विलक्षण बताते हुए भाव भरे स्वर में निवेदन किया – गुरुदेव! आपका मैनेजमेन्ट जबरदस्त है। सुबह से सायं तक छोटे-छोटे संतों को आप अलग-अलग काम सौंप देते हैं। वे प्रसन्नता से व्यवस्थित रूप में अपना कार्य करते हैं। छोटे संतों के हाथ का सहारा लेकर उनके उत्साह को वृद्धिंगत कर देते हैं। छोटे-बड़े सभी संत आचार्यवर की उपासना में तत्पर रहते हैं।

दिल्ली प्रवासी प्रदीप-शुचिता सेठिया (सुजानगढ़) ने अपने पुत्र के साथ आचार्यश्री के दर्शन किए। उन्होंने कहा – आचार्यवर! मेरा बेटा विदेश जा रहा है। आप इसे शिक्षा फरमाएं एवं मंगलपाठ सुनाएं। पूज्यप्रवर ने संस्कार-संपन्न बने रहने की और सत्साहित्य के स्वाध्याय की प्रेरणा प्रदान की, फिर मंगलपाठ सुनाया।

साढ़े नौ बजे लूणकरणसर निवासी श्री दिनेश-मंजु बरड़िया ने अपने दोनों पुत्रों चंद्रकांत एवं प्रवीण के साथ आचार्यवर के दर्शन किए। आचार्यवर ने प्रसन्नमना आशीर्वाद प्रदान किया, पूछा — क्या अभी आई हो ?

मंजु बरड़िया — हां।

आचार्यवर (संतों की ओर उन्मुख होकर) — यह कौन है, जानते हो ?

संत — तहत् गुरुदेव !

आचार्यवर — यह मुनि धनंजयजी की संसारपक्षीय बहिन है।

आचार्यवर का मंगल आशीर्वाद प्राप्त कर उन्होंने धन्यता का अनुभव किया।

जैन विश्व भारती का विकास

तत्पश्चात् जैन विश्व भारती के निदेशक श्री राजेन्द्रजी खटेड़ (लाडनूं) एवं सचिवालय में कार्यरत श्री अंशुमानसिंहजी (चाकसू/जयपुर) ने दर्शन किए। उन्होंने निवेदन किया — जैन विश्व भारती को ३५ (ळ) (ळळ) आयकर धारा के अन्तर्गत विशेष प्रकार की छूट प्राप्त हो गई है। आचार्यवर ने अवधानपूर्वक सुना और फिर फरमाया — मध्याह्न में लगभग दो बजे उपासना कर लेना।

पूज्यप्रवर की अगवानी

नौ बजकर चालीस मिनट पर आचार्यवर ने प्रवचन देने के लिए गोठी-भवन से श्री समवसरण की ओर साधन में आसीन होकर प्रस्थान किया। कुछ समय पहले ही मैंने वहां प्रवचन देना प्रारम्भ कर दिया था। मैं पूज्यप्रवर की अगवानी करने सामने गया। गुरुदेव मेरा हस्तावलम्बन लेकर मंच पर पधारे। मुनि गौतमकुमारजी ने आचार्यप्रवर के कंठ की स्वस्थता के लिए सुवालीन गोली दी। आज आचार्यवर ने 'संबोधि' पर लगभग पचीस मिनट तक प्रवचन किया। पिछले कुछ दिनों से आचार्यवर संबोधि पर प्रवचन कर रहे थे। आचार्यवर का यह प्रवचन उनके जीवन का अन्तिम प्रवचन बन गया। उस प्रवचन का संपादित रूप इस प्रकार है —

अन्तिम प्रवचन

हर व्यक्ति अनेक अवस्थाओं से गुजरता है। व्यक्ति जन्म लेता है, शिशु बनता है, बड़ा होता है, कुमार बनता है, युवा बनता है, प्रौढ़ बनता है और वृद्ध भी

बनता है। दस-दस वर्ष की दस अवस्थाएं बतलाई गईं। उन अवस्थाओं का जीवन क्रम भी अलग-अलग प्रकार का होता है। हर वर्ष और हर दिन व्यक्ति अलग-अलग प्रकार की संवेदना करता है। कभी सुख की संवेदना और कभी दुःख की संवेदना। शायद एक दिन भी ऐसा नहीं जाता होगा, जिस दिन व्यक्ति ने सुख की संवेदना न की हो अथवा दुःख की कोई संवेदना न की हो। अलग-अलग संवेदनाएं होती हैं। प्रश्न भी होता है कि ऐसा क्यों होता है ? यह एक स्वाभाविक प्रश्न है और यह प्रश्न उत्तर भी मांगता है। मेघकुमार भगवान् महावीर के पास बैठा है और इस प्रश्न का उत्तर पाना चाहता है। मेघकुमार ने कहा —

सुखास्वादाः समे जीवाः, सर्वेसन्ति प्रियायुषः।
अनिच्छंतोऽसुखं यान्ति, न यान्ति सुखमीप्सितम्।।३।११।।

भंते ! सब जीव सुख चाहते हैं, दुःख कोई नहीं चाहता। किसी से भी पूछ लो — सुख चाहते हो या दुःख ? छोटे बच्चे से भी पूछ लो — सुख चाहते हो या दुःख ? उत्तर मिलेगा — सुख, क्योंकि सुख सबको अच्छा लगता है।

सर्वे संति प्रियायुषः — सब जीव जीना चाहते हैं, मरना कोई नहीं चाहता। सबमें जीने की इच्छा है, जिजीविषा है। हर आदमी अच्छा जीवन जीना चाहता है, पूरा जीवन जीना चाहता है, मरना नहीं चाहता।

मेघकुमार ने कहा — भंते ! आदमी सुख चाहता है और बिना बुलाए दुःख आ जाता है। आदमी जीना चाहता है और मौत आ जाती है। ऐसा क्यों होता है ? कारण क्या है इसका ? आदमी जो चाहे वह मिले तो ठीक बात है। चाहता कुछ है, मिलता और कुछ है तो वह ठीक नहीं होता। जो चाहे वह मिल जाए तो ठीक है और जो चाहे वह न मिले या उल्टा मिले तो फिर आदमी के मन में प्रश्न भी होता है कि इसका कारण क्या है ? हम जो चाहते हैं, वह क्यों नहीं होता ? हमारी इच्छा के विरुद्ध काम क्यों होता है ?

कः कर्ता सुखदुःखानां, को भोक्ता कश्च घातकः।
सुखदो दुःखदः कोस्ति, स्याद्वादीश ! प्रसाधि माम्।।३।१२।।

भंते ! एक प्रश्न और है। सुख और दुःख का कर्ता कौन है ? सुख और दुःख — ये दोनों जीवन के साथ जुड़े हुए हैं। इनका कर्ता कौन है और भोक्ता कौन है ? सुख

देने वाला कौन है और दुःख देने वाला कौन है ? यह मैं जानना चाहता हूं ।

हर आदमी के मन में प्रश्न होना स्वाभाविक है, सुख देने वाला कौन है ? दुःख देने वाला कौन है ? प्रायः यह आरोपण होता है कि वह आदमी मुझे दुःख दे रहा है । सुख दे रहा है, यह सुनने को बहुत कम मिलता है । दुःख दे रहा है, यह सुनने को बहुत मिलता है ।

कुछ समय पहले हरियाणा का एक युवक आया, बोला – बहुत शिथिल हो गया हूं ।

मैंने पूछा – क्या कारण है ?

उसने कहा – पता नहीं कोई तांत्रिक-प्रयोग करा दिया गया । घर में अनेक प्रकार की चीजें मिलती हैं । हड्डियां मिल जाती हैं, खराब चीज मिल जाती है । बहुत कष्ट का अनुभव हो रहा है ।

हम इस पर दो दृष्टियों से विचार करें । भगवान् महावीर ने उत्तर दिया – मेघ ! आत्मा ही सुख-दुःख की कर्ता है और आत्मा ही सुख-दुःख की भोक्ता है ।

आत्मा कर्ता स एवास्ति, भोक्ता सोऽपि च घातकः ।
सुखदो दुःखदः सैष, निश्चयाभिमतं स्फुटम् ।।३ ।१३ ।।

निश्चयनय में तो आत्मा ही सुख-दुःख की कर्ता है, किन्तु व्यवहारनय की दृष्टि से देखें तो सुख-दुःख का निमित्त कोई दूसरा भी बन सकता है, अपना अज्ञान भी बन सकता है, दूसरे व्यक्ति का गलत सुझाव भी बन सकता है, गलत परामर्श भी बन सकता है, गलत चिन्तन भी बन सकता है, व्यक्ति का अपना लोभ भी बन सकता है ।

एक बार एक ब्राह्मण ने दक्षिणायन शंख की साधना की । वह शंख सिद्ध होने पर काफी कामनाओं को पूरा करता है । ब्राह्मण की साधना सिद्ध हुई । वह दक्षिणायन शंख लेकर अपने घर जा रहा था । रास्ते में एक घर पर ठहरा । प्रातःकाल का समय । चार बजे से पहले उठा, शंख की पूजा की और मांगा – मुझे हजार रुपए दो । शंख ने हजार रुपए दे दिए । घर वाले ने सोचा, यह तो बहुत करामाती शंख है । जो मांगता है वह मिल जाता है । इस शंख को लेना चाहिए । वह

ब्राह्मण इधर-उधर गया। घर का मालिक आया, शंख को चुरा लिया और उसकी जगह दूसरा शंख रख दिया। ब्राह्मण जब घर पहुंचा, तब पता चला कि कुछ धोखा हुआ है। सोचा, लड़ाई करने से कोई मतलब नहीं है। बुद्धि के द्वारा ही इस काम को ठीक किया जा सकता है। पुनः यात्रा पर गया, दूसरे शंख को लाया और उसी घर पर ठहरा। पश्चिम रात्रि का समय था। वह बैठा और मांगना शुरू किया। उसने कहा — मुझे हजार रुपये दो। शंख बोला — हजार नहीं, लो ये दस हजार रुपये। घर वाले ने सुना कि यह तो उससे अधिक अच्छा है। वह तो जितना मांगो, उतना देता है। यह तो जितना मांगो, उसका दस गुना देता है, बहुत अच्छा है। तो क्या करूं? वैसा उपाय हो जाए। जब ब्राह्मण इधर-उधर हुआ, तब उसने पहले वाले शंख को रख दिया और इस शंख को ले लिया। ब्राह्मण अपने शंख को पाकर चला गया। अब आत्मा कैसे कर्ता-विकर्ता बनती है, अपनी प्रवृत्तियां, अपना चिन्तन, अपना एटीट्यूट, अपना भाव किस प्रकार कर्ता बनता है, एक बहुत स्पष्ट उदाहरण है कि उस व्यक्ति के मन में अतिलोभ का भाव आया और उस लोभ ने संपत्ति को गंवा दिया और हाथ में एक दूसरा शंख ले लिया। अब दूसरा दिन। पश्चिम रात्रि में चार बजे का समय। वह उठा और बोला — मुझे हजार रुपये दो। शंख ने कहा — लो, दस हजार। घर वाला व्यक्ति मांगता चला गया और वह बोलता चला गया। आखिर उसने कहा — कुछ दो तो सही। तब उस शंख ने कहा — तुम भी बोलते जाओ और मैं भी बोलता जाऊं। और कुछ नहीं है। उसने कहा —

दक्षिणायनशंखस्य, चरित्रं भिन्नमस्ति यत्।
अहं डफोरशंखोस्मि, वदामि न ददामि च।।

तुम जानते नहीं हो। वह दक्षिणायन शंख था, तुमने जो पहले लिया था। उसका चरित्र भिन्न होता है। मैं तो डफोरशंख हूं, बोलता हूं, देता कुछ भी नहीं। मैं देना नहीं जानता, बोलना जानता हूं।

हम इस कथावस्तु पर विचार करें कि उसको किसने ठगा? अपनी ही लोभ की प्रवृत्ति ने। पहले तो चोरी की प्रवृत्ति ने वह शंख लिया। फिर लोभ इतना बढ़ गया और उस लोभ से ठगा गया। दक्षिणायन शंख हाथ से निकल गया और डफोरशंख हाथ में आ गया। हर घटना का हम विश्लेषण करें तो पता चलेगा कि आदमी स्वयं मायाजाल रचता है और अपने मकड़जाल में स्वयं ही फंस जाता है। आप दुनिया

के बहुत सारे कार्यों का विश्लेषण करें, बहुत सारी नीतियों का विश्लेषण करें कि जो नीति निर्माण करते हैं, नीति निर्माण करने वाले अपने ही मकड़जाल में फंस जाते हैं।

इन सारे संदर्भों में हम विचार करें तो निष्कर्ष आएगा कि कर्ता मूलतः आत्मा है और दूसरा कहीं-कहीं निमित्त बन सकता है। तर्कशास्त्र में दो कारण माने गए हैं — मूल कारण और निमित्त कारण। तीन भी हो सकते हैं, पर मूल दो कारण माने गए हैं। निमित्त कारण भी बनते हैं। सुख के निमित्त भी बनते हैं और दुःख के निमित्त भी बनते हैं। पर मूल ये नहीं हैं।

उत्तराअध्ययन सूत्र में कहा गया — **अप्पा कत्ता विकत्ता य दुहाण य सुहाण य।** दुःख और सुख का कोई कर्ता नहीं है। आत्मा ही कर्ता और विकर्ता है, क्योंकि संवेदन किसको होता है? संवेदन चेतना को होता है। जड़ वस्तु को संवेदन नहीं होता। एक आदमी को बहुत धन की प्राप्ति हो गई, सुख का संवेदन हुआ। एक व्यक्ति के घाटा लग गया, दुःख का संवेदन हुआ। वह संवेदन पैसे में नहीं था। संवेदन करने वाली हमारी आत्मा है। आत्मा ही सुख का संवेदन करती है और आत्मा ही दुःख का संवेदन करती है। दूसरा निमित्त बन सकता है। कोई आदमी गुस्से में आया और एक थप्पड़ मार दिया। जिसको थप्पड़ मारा उसको कष्ट हुआ, दुःख का संवेदन हुआ और निमित्त वह थप्पड़ मारने वाला बन गया। चलते समय ठोकर लगी और दर्द हो गया। संवेदन तो स्वयं करेगा और निमित्त पत्थर बन गया। निमित्त दूसरा कोई बन सकता है। हम यह मानें कि मूल कारण कोई दूसरा नहीं है, निमित्त बन सकते हैं। अगर हम अपनी चेतना का परिष्कार करें तो फिर कोई सुख-दुःख देने वाला नहीं है। न कोई भौतिक पदार्थ सुख देने वाला, न कोई दुःख देने वाला। फिर तो अपनी आत्मा का आनंद प्रकट होता है। ऐसा आनंद, जिसका अनुभव कभी होता नहीं है।

लोग भौतिक सुख-दुःख से परिचित हैं। एक वस्तु मिली, सुख हुआ। अनुकूल योग मिला, सुख हुआ। इससे तो परिचित हैं। किसी निमित्त के बिना, किसी वस्तु की प्राप्ति के बिना भी सुख होता है। उसे जानना बहुत जरूरी है। बिना प्राप्ति के भी सुख होता है। हम लोग सरदारशहर आ रहे थे। लोगों ने कहा — सरदारशहर की जनता में बहुत उत्साह है, सुख है, आनंद है, सुख की लहर है। हमने क्या दिया? कुछ दिया नहीं हमने। न धन दिया, न कोई आशीर्वाद दिया, न

और कुछ किया, फिर सुख किस बात का ? यह सुख वस्तु की प्राप्ति से होने वाला सुख नहीं है। यह सुख आत्मानुभूति से प्राप्त होने वाला सुख है।

हम इसको समझें कि संयम में भी सुख होता है। एक परिवार में दो महिलाएं हैं। घर में अच्छा भोजन बना। एक ने खाया और कहने लगी कि बड़ा अच्छा लगा, बहुत स्वाद आया। दूसरी के उपवास है। उससे पूछा — कैसे है ? उसने कहा — बहुत आनन्द है, बहुत सुख है। खाने को कुछ मिला नहीं, सुख किस बात से हुआ ? बहुत सारे लोग जो वृद्ध अवस्था में हैं, वे कहते हैं कि देखो, ध्यान रखना। मैं अनशन के बिना न चला जाऊं। अब अनशन में कौनसा सुख मिलेगा ? अपने भीतर भी सुख का समुद्र है। आप न मानें कि वस्तुओं से सुख मिलता है। आत्मा का लक्षण है — अनन्त ज्ञान, अनन्त दर्शन, अनन्त चारित्र, अनन्त शक्ति। यह हमारे भीतर है। जो व्यक्ति भीतर का सुख लेना जानता है, उसे बाहर के सुख फीके लगने लग जाते हैं। एक उदाहरण बतलाऊं, जैन विश्व भारती में तुलसी अध्यात्म नीड्म में शिविर था। शिविर संपन्न हुआ और लोग जाने लगे। मैं उधर टहल रहा था। एक भाई आया, आकर वंदना की और खड़ा हुआ, रोने लग गया, आंख में आंसू आ गए। मैंने पूछा — क्या किसी ने आपका अपमान किया है ? उसने कहा — नहीं, यहां तो बहुत अच्छा वातावरण है। तो आपको कुछ हुआ ? नहीं, कुछ नहीं हुआ। तो फिर आंख में आंसू ? वह बोला, ये दुःख के आंसू नहीं, ये हर्ष के आंसू हैं। हर्ष के साथ-साथ कष्ट के भी हैं। किस बात का कष्ट ? उसने कहा — मैं आज दस दिन के बाद शिविर को छोड़कर जा रहा हूं। मैं मुंबई से आया हूं। उस मोहमयी नगरी में रहता हूं। वह संपन्न आदमी, करोड़पति आदमी था। उसने कहा — साठ वर्ष की मेरी अवस्था है और साठ वर्ष में जितना वस्तुओं का उपभोग करना था, मैंने खुलकर किया। किन्तु इस बार जब आपने अन्तर्यात्रा का प्रयोग करवाया तो उस अन्तर्यात्रा के प्रयोग से मुझे जो सुख मिला, वैसा सुख मुझे साठ वर्ष की अवस्था में कभी नहीं मिला।

अब मैं आपसे पूछना चाहता हूं कि वह सुख कहां से आया ? हमने कुछ भी नहीं दिया। न कोई खाने की वस्तु दी, न कोई धन दिया। उसको इतना सुख कहां से मिला ? वह व्यक्ति कहता है कि इतने वर्षों में जो सुख मुझे नहीं मिला, उससे ज्यादा मुझे इन दस दिनों में सुख मिला। यह सुख कहां से आया ? या तो मानें कि

वह झूठ बोल रहा है, किन्तु झूठ बोलने का कोई मतलब नहीं है। यदि सच बोल रहा है तो हमारे इस प्रश्न का उत्तर है कि अगर हम खोजें तो अपने भीतर बहुत सुख है, आनन्द है और न खोजें तो कुछ मिलता नहीं है।

मैं दूसरी घटना बतलाऊं, वहीं जैन विश्व भारती में ही दूसरी बार शिविर था। मैं प्रयोग करा रहा था। एक घंटे का प्रयोग संपन्न हुआ। सब लोग उठ गए। एक युवक नहीं उठा। युवक भी बहुत पढ़ा-लिखा होशियार था। राजलदेसर का रमेश कुंडलिया, जो कि हैदराबाद में रहता था। हम लोग चले गए। थोड़ी देर बाद उसकी मां आई और बोली, वह तो उठ नहीं रहा है। फिर हमारे मुनि किशनलालजी और मुनि महेन्द्रजी गए। दो घंटे बीत गए तो भी नहीं उठा। फिर मैं गया, जाकर देखा और एक प्रयोग किया। उसके दर्शन केन्द्र को दबाया।

तीन घंटे बाद वह उठा। मैंने कहा — रमेश ! क्या तुम्हें पता नहीं चला ? रमेश — मुझे पता तो चल गया कि ध्यान का समय खत्म हो गया। मैंने कहा — इतने संत आए, तुम्हारी मां आई, सबने कहा, फिर तुम उठे क्यों नहीं ? वह बोला — मैं उठ नहीं सका। उस समय मेरे दर्शन केन्द्र में इतने सुख के प्रकंपन आ रहे थे कि मैं उस सुख को छोड़ नहीं सका। मैं जानता हुआ भी कि समय हो गया, उस चक्र को तोड़ नहीं सका।

मैं पूछता हूं, वह सुख कहां से आया ? तीन घंटे तक पानी पीना, भोजन करना, सब कुछ छूट गया, वह सुख कहां से आया ? हम केवल बाहर-बाहर की यात्रा करते हैं, बाहर की बात को जानते हैं, बाहर के सुख को जानते हैं। जो व्यक्ति कभी अपने भीतर नहीं झांकता, आधा घंटा आंख मूंदकर अपने भीतर नहीं देखता, उसको अनुभव ही नहीं हो सकता कि मेरे भीतर क्या है ? हर व्यक्ति के भीतर सुख-दुःख है, किन्तु अन्तर्दर्शन के बिना, भीतर की यात्रा किए बिना कोरी बाहर की यात्रा से उसका अनुभव नहीं हो सकता। इसलिए इस सारे संदर्भ में देखें तो भगवान् महावीर ने जो उत्तर दिया, निश्चयनय की दृष्टि से बड़ा सटीक उत्तर है कि आत्मा ही सुख-दुःख की कर्ता है। सुख भी तुम्हारे भीतर है और दुःख भी तुम्हारे भीतर है। सब अपना किया हुआ है। बाहर का निमित्त मिलता है, कभी सुख का संवेदन, कभी दुःख का संवेदन हो जाता है। तुम और आत्मानुभूति में जाओ तो भौतिक सुख से भी परे और इस दुःख से भी परे एक सहज आनंद की अनुभूति हो

सकती है।

हम लोग भी ध्यान के प्रयोग इसलिए करते हैं, शिविर भी इसीलिए होते हैं कि व्यक्ति के यह समझ में आए कि यह केवल बाह्य जगत् ही हमारा जगत् नहीं है। एक दूसरा भीतर का जगत् भी हमारा जगत् है। हम बाहर के जगत् से मुक्त होकर और कभी-कभी भीतर की अंधेरी गहन गुफा में जाने का प्रयत्न करें और वहां क्या है, उसका अनुभव करें तो बात समझ में आएगी कि वास्तव में आत्मा ही सुख-दुःख की कर्ता है, आत्मा ही भोक्ता है और आत्मा ही अपनी अनुभूति के द्वारा इस सुख-दुःख के चक्र से मुक्त हो सकती है। (इस प्रवचन का अविकल रूप ओडियो कैसेट से सुना जा सकता है।)

साधन-वाहक बनने का सौभाग्य

प्रवचन के पश्चात् आचार्यवर ने श्रद्धालु जनता को दर्शन दिए। फिर मेरा हस्तावलंब लेकर श्री समवसरण से बाहर तक पधारे। तत्पश्चात् साधन में विराजे। पूज्यप्रवर के साधन चलाने का सौभाग्य मुख्यतया मुनि जयकुमारजी, मुनि रजनीशकुमारजी (बायतू), मुनि कीर्तिकुमारजी (जसोल), मुनि विश्रुतकुमारजी, मुनि रोहितकुमारजी (टापरा), मुनि अक्षयप्रकाशजी को मिला। कभी-कभी अन्य संतों को भी यह सौभाग्य प्राप्त हुआ होगा, किन्तु अन्तिम साधन-वाहक बनने का सौभाग्य मुनि कान्तिकुमारजी (टापरा) और मुनि मननकुमारजी (बरपेटा रोड़) को मिला।

अणुव्रत का मां-बाप कौन ?

गोठी-भवन पधारने के बाद साध्वी सुप्रभाजी और साध्वी ज्ञानप्रभाजी (सरदारशहर) अनार का रस लेकर आईं। आचार्यवर ने उसे लिया। फिर लगभग ग्यारह बजे गोठी-भवन के दक्षिण-पश्चिमी कमरे में आचार्यप्रवर की सन्निधि में अणुव्रत के संदर्भ में एक चिन्तन-गोष्ठी का आयोजन हुआ। मैं भी वहां उपस्थित था। मुनि महावीरकुमारजी (फलसूंड) भी सेवा में उपासीन थे। इस चिन्तन-गोष्ठी में अणुव्रत महासमिति, अणुव्रत विश्व भारती और अणुव्रत न्यास के कार्यकर्ता सम्मिलित थे। संगोष्ठी के संभागी व्यक्ति इस प्रकार हैं — मुनिश्री सुखलालजी स्वामी, मुनिश्री महेन्द्रकुमारजी स्वामी, मुनि कुमारश्रमणजी, अणुव्रत महासमिति

के अध्यक्ष श्री निर्मलजी रांका, अणुव्रत विश्व भारती के अध्यक्ष श्री तेजकरणजी सुराणा, अणुव्रत विश्व भारती के मंत्री श्री संचयजी जैन, अखिल भारतीय अणुव्रत न्यास के प्रबंध न्यासी श्री धनराजजी बोथरा, संयुक्त प्रबन्ध न्यासी श्री सुशीलजी जैन, डॉ. महेन्द्रजी कर्णावट, दिल्ली प्रादेशिक अणुव्रत समिति के अध्यक्ष श्री बाबूलालजी दूगड़ (सरदारशहर) एवं मंत्री श्री प्रकाशजी भंसाली (गंगाशहर)। इस चिन्तन-गोष्ठी के तीन सत्र ८ मई को पूज्यवर की सन्निधि में आयोजित हो चुके थे। आज प्रातः मुनिश्री सुखलालजी स्वामी, मुनिश्री महेन्द्रकुमारजी स्वामी एवं मुनि कुमारश्रमणजी के साथ कार्यकर्ताओं ने बैठक की। कुछ महत्त्वपूर्ण सुझाव सामने आए। तीनों संस्थाओं के समन्वित कार्यक्रम चलें, इस दृष्टि से अणुव्रत विकास परिषद् का निर्माण हो, ऐसा चिन्तन चला। आचार्यवर ने इस असवर पर अपने मर्मस्पर्शी संबोधन में अणुव्रत आंदोलन को गतिशील एवं तेजस्वी बनाने की अभिप्रेरणा दी। आचार्यवर का वक्तव्य अणुव्रत के क्षेत्र में काम करने वाले व्यक्तियों के हृदय को आंदोलित एवं उद्वेलित करने वाला था। आचार्यवर ने अपनी संवेदना को इन शब्दों में प्रस्तुति दी — यह चिन्तन कहो या चिन्ता, मेरे मन में है। कई बार मन में आया, पहले एक वर्ग था — जयचंदलालजी दफ्तरी (सरदारशहर), हनूतमलजी सुराणा (चूरू) आदि का, दूसरा वर्ग देवेन्द्र कर्णावट (राजसमन्द) आदि का। उन सब पुराने कार्यकर्ताओं के जाने के बाद अब अणुव्रत का मां-बाप कौन है? यह एक बड़ा प्रश्न है। हमारा काम तो है ही। गृहस्थ समाज में अणुव्रत का दायित्व कौन अनुभव करे?

अहिंसा समवाय

अहिंसा समवाय के हमने चार सूत्र दिए थे — सह आसन, सह चिन्तन, सह निर्णय और क्रियान्विति। अहिंसा, नैतिकता आदि के क्षेत्र में जो काम कर रहे हैं, उन्हें समय-समय पर आमंत्रित कर गोष्ठी की जाए। साफ-सुथरी छवि वाले राजनेताओं को भी जोड़ा जाए। आचार्यवर ने इस संदर्भ में अनेक नाम भी सुझाए।

कार्य के संदर्भ में आचार्यवर ने कहा — प्रदेश एवं स्थानीय समितियां कार्य करने से पूर्व अणुव्रत महासमिति की राय लें। दिल्ली में मुख्य कार्य अणुव्रत महासमिति का रहे, स्थानीय समिति सहायक हो सकती है।

आचार्यवर ने अनेक प्रस्तुत बिन्दुओं पर भी मार्गदर्शन प्रदान किया। दो दिवसीय चिन्तन-गोष्ठी के मुख्य निर्णयों को लिपिबद्ध किया गया। निर्णायक कार्य योजना के लिए एक और संगोष्ठी करने का निश्चय हुआ।

उपासना का अवसर

संगोष्ठी के तत्काल बाद आचार्यवर ने आध्यात्मिक संबल पाने के लिए उपस्थित तीन परिवारों को उपासना का अवसर प्रदान किया। मैं भी उस समय पास में ही बैठा था। चित्तौड़गढ़ के ढीलीवाल परिवार की स्व. श्रीमती मोहनबाई ढीलीवाल (धर्मपत्नी स्व. श्री गोविन्दसिंहजी ढीलीवाल) की श्रद्धा-भक्ति और सेवाभाव का उल्लेख करते हुए उन्हें 'श्रद्धा की प्रतिमूर्ति' संबोधन से संबोधित किया। परिवारजनों के अनुरोध पर आचार्यवर ने खद्दर की धोती का व्रत भी निपजाया।

शासनसेवी श्री नरेशजी मेहता (जयपुर) ने श्री सुबोध जैन (जयपुर) और अपने पुत्र सम्यक् के साथ आचार्यवर के दर्शन किए। उन्होंने 'महाप्रज्ञ सेवा प्रकल्प' के अंतर्गत चल रहे समाज-सेवा के कार्यों की विशद अवगति दी। आचार्यवर ने उन्हें वात्सल्यपूर्ण आशीर्वाद प्रदान किया।

सीख भ्रातृ-युगल को

ग्यारह बजकर पचीस मिनट पर आचार्यवर पंचमी-समिति पधारने के लिए पट्ट से खड़े हुए। भ्रातृ-युगल मुनि गौतमकुमारजी और मुनि सुधांशुकुमारजी के हाथ का सहारा लिया। मुनि आकाशकुमारजी, मुनि नयकुमारजी (जलगांव) ने जल का पात्र आदि रखा। आचार्यवर ने मुनि सुधांशुकुमारजी की ओर दृष्टिपात करते हुए पूछा – तुम दोनों भाई आपस में लड़ते तो नहीं हो ?

मुनि सुधांशुकुमारजी – नहीं गुरुदेव !

आचार्यवर – तुम बड़े भाई की बात मानते हो ?

मुनि सुधांशुकुमारजी – तहत् गुरुदेव !

आचार्यवर – तुम्हारे दोनों के आपस में ठीक रहता है ?

मुनि गौतमकुमारजी – गुरुदेव ! एकदम ठीक है।

आचार्यवर (मुस्कुराते हुए) – तब ठीक है। दोनों भाई परस्पर प्रेम से, हिलमिल कर रहा करो।

प्रसन्नमना आहार

साढ़े ग्यारह बजे साध्वी विमलप्रज्ञाजी (बीदासर) और साध्वी इन्दुयशाजी (सरदारशहर) गोचरी लेकर उपस्थित हुईं। आचार्यवर सदा की भांति प्रसन्नमना आहार के लिए विराजे। मेरी परिचर्या में नियुक्त मुनि कुमारश्रमणजी प्रायः मेरे लिए समुच्चय (आचार्यवर आदि) की गोचरी में से आहार लेकर आते थे, किन्तु आज मुनि महावीरकुमारजी आहार लाने गए। आचार्यवर ने उनको देखकर कहा – अच्छा, आज महावीरजी आए हैं। आचार्यवर ने अपने हाथ से उनको छन्ने का ग्रास बख्साया। फिर तीन-चार बार फरमाया – लो, और ले लो। गुरु की असीम अनुकम्पा प्राप्त कर मुनि महावीर गद्‌गद् हो गए।

मुनि धनंजयकुमारजी ने एक पात्र में कुछ मिष्ठान्न पूज्यवर के सामने रखे।

आचार्यवर – आज कहां से लाए हो ?

मुनि धनंजयकुमारजी – मेरी संसारपक्षीय बहन मंजु आई है। उनकी सुपुत्री प्रियंका-प्रशान्त दूगड़ (सरदारशहर) की शादी की वर्षगांठ है। वे अरविन्दजी दूगड़ के यहां ठहरे हैं। मैं वहां से गोचरी करके लाया हूं।

आचार्यवर (एक लड्डू हाथ में लेते हुए) – यह तो बीकानेर की प्रसिद्ध मिठाई है।

मुनि धनंजयकुमारजी – हां, यह पंचधारी लड्डू है।

आचार्यवर ने प्रसन्नता से साधु-साध्वियों को मिठाई के ग्रास दिए। उसके पश्चात् सदा की भांति आहार किया। आचार्यवर ने आहार में एक पतला फुलका, एक खाखरा, लौकी, तुरई का शाक एवं पपीते की कुछ फांक ली।

आहार के पश्चात् मुनि जयकुमारजी को पपीता, सेव आदि फल बख्साए। मुनि धनंजयकुमारजी को पंचधारी का लड्डू यह कहते हुए बख्साया कि कभी-कभी

थोड़ा मीठा खाना चाहिए। संभवतः गुरुदेव के हस्तकमल से अन्तिम ग्रास लेने का अवसर मुनि धनंजयकुमारजी को मिला।

पूज्यप्रवर ने सुने अन्तिम समाचार

आहार के बाद मैं पूज्यश्री के उपपात में गया, वहां बैठा। प्रायः मध्याह्न-भोजन के बाद मैं आचार्यश्री के पास जाया करता था। उस समय समाचार-पत्र स्वयं पढ़ता और कभी-कभार गुरुदेव को भी सुना देता। बहुधा दो समाचार-पत्र सन्त लाते थे — १. राजस्थान पत्रिका २. दैनिक भास्कर। दैनिक भास्कर तो प्रायः मैं रख लेता और राजस्थान पत्रिका पूज्यश्री के हाथों में थमा देता। आज भी मैं उस समय पूज्यश्री के परिपार्श्व में बैठा था। उसी समय चन्दनमलजी चिण्डालिया (सुपुत्र — सुजानमलजी चिण्डालिया) सपरिवार वहां पहुंचे। उन्होंने चतुर्मास में साध्वीप्रमुखाजी का प्रवास अपनी हवेली (जो पहले रावतमलजी गोठी की थी) में कराने का अनुरोध किया। उनका अनुरोध सुन लिया गया, किन्तु कोई निर्णय नहीं किया गया यानी उसे विचाराधीन रखा गया।

परमपूज्यश्री उस समय रणजीतजी गोठी की हवेली में नीचे हॉल में उत्तर-पश्चिमी कमरे के बाहर के भाग में विराजमान थे। संभवतः वहीं उन्होंने विश्राम किया। मैं थोड़ी देर गुरुदेव के पास रुककर अपने प्रवास प्रकोष्ठ (गोठीजी की हवेली में नीचे दक्षिण-पश्चिमी कमरे) में आ गया। मैंने वहां लेटकर विश्राम किया।

आचार्यवर की सेवा में अनेक बालमुनि थे। मुनि सुधांशुकुमारजी ने समाचार-पत्र के कुछ समाचार पढ़कर सुनाए। विश्राम के समय आचार्यवर बालमुनियों से दैनिक पत्रों में प्रकाशित समाचार सुनते थे, जिससे उनका हिन्दी उच्चारण शुद्ध हो सके और वे पढ़ने में सक्षम हो सकें।

सापेक्ष अर्थशास्त्र के संदर्भ में

लगभग साढ़े बारह बजे मुनि अक्षयप्रकाशजी ने आचार्यवर से रिलेटिव इकोनोमिक्स विषय पर बात की। आचार्यवर ने आगामी २५ सितम्बर को प्रस्तावित अर्थशास्त्र विषयक कॉन्फ्रेन्स के संदर्भ में दिशा-निर्देश देते हुए

कहा – माणक सिंघी (श्रीडूंगरगढ़) संसद सत्र के कारण व्यस्त था। अब संसद सत्र पूरा हो गया है। माणक सिंघी, बजरंग जैन (राजगढ़), शांतिलाल बरमेचा (लाडनूं) आदि के साथ मिलकर सापेक्ष अर्थशास्त्र की योजना बनाओ, जिससे उसकी क्रियान्विति के बारे में सोचा जा सके। कुछ क्षण बाद आचार्यवर निद्राधीन हो गए।

सेवा का उल्लेख

लगभग डेढ़ बजे श्री जतनमलजी सेठिया (सरदारशहर) सपत्नीक आए। आचार्यवर उस समय जगे ही थे। श्री सेठियाजी ने निवेदन किया– आचार्यवर! आज बारह वर्षों में पहली बार चौका बन्द करके जाना पड़ रहा है।

आचार्यवर – कहां जा रहे हो?

जतनमलजी – कोलकाता में साली के लड़के की शादी है।

आचार्यवर – जतनमलजी और इनकी धर्मपत्नी सरोज ने बहुत सेवा की है, बहुत निष्ठा से सेवा की है। इनका मन सदा सेवा में ही रहा है। यह कहकर आचार्यवर ने उन्हें मंगलपाठ सुनाया।

आगम कार्य का वर्धापन

कुछ समय बाद आचार्यवर पट्ट पर आसीन हुए। मुनि रजनीशकुमारजी उदक लेकर आए। आचार्यवर ने जल पीया, फिर आवश्यक कार्य के लिए भीतरी कक्ष में पधारे। भीतरी कक्ष में रखे हुए पुट्ठे (पुस्तकों का बंडल) की ओर संकेत कर आचार्यवर ने पूछा – इसमें क्या है?

मुनि धनंजयकुमारजी – आचार्यवर! इसमें भगवती भाष्य से संबद्ध ग्रंथ हैं।

आचार्यवर – हां, यह यहीं ठीक है। इसका काम चल रहा है। यह बहुत महत्त्वपूर्ण कार्य है। आचार्यवर ने आगम-कार्य के प्रति प्रसन्नता जाहिर की। कुछ क्षण बाद आचार्यवर पुनः बाहर पधार गए।

स्थान परिवर्तन

आचार्यवर – आज रविवार है। आगम-कार्य नहीं करना है, इसलिए कुर्सी को पट्ट के पास ही लगा दो।

निर्दिष्ट स्थान पर कुर्सी लगा रहे संतों से आचार्यवर ने पूछा — देखो, कुर्सी लोहे की बीम के नीचे तो नहीं है ?

संत — गुरुदेव ! कुर्सी उधर नहीं है।

आचार्यवर कुर्सी पर विराज गए। कुछ क्षण बाद वहां शायद गर्मी का अनुभव हुआ, इसलिए पूज्यवर वहां से उठकर दरवाजे के परिपार्श्व में विराजे। वहां कुर्सी पर विराजते ही दाएं नथुने को हाथ से बंद कर बाएं नथुने से श्वास का प्रयोग करने लगे। आचार्यवर गर्मी के अनुभव की स्थिति में प्रायः यह प्रयोग करते थे। आंखें मूंद कर बाएं नथुने से दीर्घश्वास लेने का क्रम कुछ क्षणों तक चलता रहा।

मुनि जयंतकुमारजी कुछ निवेदन करने के लिए आए। आचार्यवर से उन्होंने अपनी बात निवेदित की। उसी समय आचार्यप्रवर ने पंजाब से समागत लोगों को उपासना कराई, मंगलपाठ सुनाया।

आत्मकथा की चर्चा

गंगाशहर के श्री दीपचन्दजी सांखला, तोलारामजी सामसुखा, माणकचंदजी सामसुखा, आसकरणजी पारख आदि ने दर्शन किए। आचार्यवर ने उन्हें भी जिकारा देते हुए पूछा — कैसे आए हो ?

मुनि धनंजयकुमारजी — आचार्यवर की आत्मकथा का पहला भाग (यात्रा : एक अकिञ्चन की) कंपोज हो चुका है। आचार्यवर के जन्म दिवस (आषाढ़ कृष्णा १३) १० जुलाई को उस ग्रंथ के लोकार्पण का कार्यक्रम निर्धारित है। सांखलाजी उसके आकार-प्रकार, प्रकाशन आदि के संदर्भ में जानकारी लेने आए हैं। मैं इनसे बात कर रहा हूं।

आचार्यवर — ठीक है, तुम इनसे बात करो।

दवा का प्रयोग

लगभग दो बजे के आसपास मैं अपने प्रकोष्ठ के बाहर हॉल के पश्चिमी भाग में बैठा था। कुछ सन्त और मुख्य नियोजिकाजी आदि साध्वियां मेरे पास बैठी थीं। मैं उनको भिक्षु वाङ्मय का 'निषेपां री चौपई' ग्रन्थ पढ़ा रहा था।

लगभग दो बजकर सात मिनट पर आचार्यवर को असह्य जलन महसूस हुई। आचार्यवर के निर्देश से मुनि हितेन्द्रकुमारजी मुनि जयकुमारजी को बुलाकर लाए।

आचार्यवर – बहुत जलन हो रही है, क्या दवाई दोगे ?

मुनि जयकुमारजी – आचार्यवर की मर्जी हो तो मिश्री और चन्दन का तेल ले आऊं।

आचार्यवर ने इसके लिए अनुमति दे दी। मुनि जयकुमारजी उसी समय चन्दन का तेल मिश्री के साथ ले आए। आचार्यवर ने उसका उपयोग किया।

मुनि जयकुमारजी – आचार्यवर ! जलन का कारण कुछ समझ में नहीं आ रहा है।

आचार्यवर – आहार विदग्ध हो जाता है, इस कारण जलन हो जाती है।

मुनि जयकुमारजी – आचार्यवर ने आहार में कुछ ऐसा नहीं लिया है, जिससे जलन हो।

आचार्यवर – आहार तो वही लिया, जो रोज लेते रहे हैं। उसमें तो कोई पदार्थ ऐसा नहीं था, जो जलन का कारण बने।

मुनि जयकुमारजी – आचार्यवर ! आप कुछ देर विश्राम कराएं।

आचार्यवर – ठीक है, भीतर कक्ष में चलो, वहीं विश्राम करेंगे।

पुनः दवा का प्रयोग

मुनि जयकुमारजी और मुनि हितेन्द्रकुमारजी का हस्तावलम्ब लेकर आचार्यवर भीतरी कक्ष (उत्तर-पश्चिमी कमरे) में पधारे और उत्तराभिमुख होकर छोटे पट्ट पर विराजे। मुनि जयकुमारजी ने मुनि रजनीशकुमारजी को बुलाया। दोनों मुनि बड़े पट्ट को भीतर ले आए। बिछौना बिछाया और पूज्यप्रवर को विश्राम के लिए निवेदन किया। आचार्यवर ने छोटे पट्ट पर विराजते ही पुनः बाएं स्वर से श्वास लेने का प्रयोग शुरू कर दिया। उसी मुद्रा में आचार्यवर बोले – जलन ज्यादा हो रही है, और क्या करें ? तुम पहले घोल ले आओ। ज्ञातव्य है कि आचार्यवर को अनेक बार एसिडिटी की समस्या होती थी। तब प्रायः एलोपैथी दवा ट्राइकन

एम.सी.एस. का घोल ले लेते और ऊष्मा शान्त हो जाती।

मुनि जयकुमारजी – आप पहले विश्राम कराएं। मैं घोल ले आऊंगा।

आचार्यवर – पहले घोल ले आओ।

मुनि जयकुमारजी – आप बड़े पट्ट पर विराज जाएं।

हां, यह कहते हुए आचार्यवर खड़े हुए, किन्तु जैसे ही आचार्यप्रवर ने कदम उठाने का प्रयास किया तो उठा नहीं। मुनि रजनीशकुमारजी और मुनि हेमन्तकुमारजी दोनों तरफ सहारा दिए हुए थे। मुनि रोहितकुमारजी और मुनि हितेन्द्रकुमारजी सेवा में वहीं खड़े थे।

पूज्यप्रवर को पट्ट तक जाने में अशक्यता अनुभव हुई, तब मुनि रजनीशकुमारजी ने निवेदन किया – आचार्यवर यहीं विराज जाएं।

आचार्यवर के लिए खड़े रहना भी मुश्किल हो गया। वे उसी समय पट्ट पर विराज गए।

अन्तिम वाक्य

आचार्यवर ने कहा – शरीर में शून्यता-सी आ रही है।

मुनि रजनीशकुमारजी ने पूछा – डॉक्टर को याद कर लें?

आचार्यवर ने कहा – हां, बुलाना ही है।

मुनि रजनीशकुमारजी – मैं युवाचार्यश्री को निवेदन कर दूं कि आचार्यवर के ठीक नहीं है?

आचार्यवर – हां, कर दो।

आचार्यवर के मुखारविन्द से निकला यह अन्तिम वाक्य था। यह कहते समय भी आचार्यवर का हाथ दाएं नथुने को दबाए हुए था। वे बाएं नथुने से श्वास लेते हुए दीर्घश्वास प्रेक्षा का तन्मयता से प्रयोग कर रहे थे। तत्काल मुनि रजनीशकुमारजी मेरे पास आए। उन्होंने कहा – आचार्यश्री के ठीक नहीं है। जलन ज्यादा है, शून्यता भी आ रही है। आप एक बार अन्दर पधारें। इधर मुनि रजनीशकुमारजी मुझे बता रहे थे और उधर मुनि रोहितकुमारजी आचार्यवर के

शरीर को सहारा दिए हुए थे। आचार्यवर का हाथ स्वतः नाक से हटकर नीचे आ गया। मैं अविलम्ब उठा और पार्श्ववर्ती कमरे (हॉल के उत्तर-पश्चिमी कमरे) के भीतर गया, जहां आचार्यश्री मध्यम आकार के पट्ट पर विराजमान थे। मैंने देखा कि पूज्यप्रवर के पांव नीचे जमीन पर थे और मुखमण्डल कुछ अस्वाभाविक हो रहा था। उसी समय साध्वी सुमतिप्रभा (सरदारशहर) और साध्वी विशालयशा (सरदारशहर) साध्वीप्रमुखाजी के पास पहुंची और सारी स्थिति बताई। साध्वीप्रमुखा कनकप्रभाजी आदि साध्वियां कुछ ही क्षणों में गोठी-भवन पहुंच गईं। कमरे के अन्दर जाते ही तत्काल मेरे मुख से 'उवसग्गहरं पासं......' उच्चरित हुआ। मेरे देखते-देखते गुरुदेव की गर्दन नीचे झुक गई। उस समय लगभग दो बजकर दस-बारह मिनट का समय रहा होगा। संभावना है कि वही समय अवसान का रहा होगा। उसके बाद संभवतः मैंने 'ॐ नमो भगवते वर्द्धमानाय....' का पाठ किया। कुछ समय बाद 'सरणसूत्र' का भी सामूहिक पाठ किया गया। मेरे पास अनेक सन्त और साध्वियां थीं।

जीवन को बचाने का प्रयास

सन्तों ने पूज्यप्रवर के शरीर को उठाकर बड़े पट्ट पर सुला दिया। मैंने सन्तों से कहा — तत्काल डॉक्टर को याद करो। समणी चारित्रप्रज्ञाजी के संसारपक्षीय पिताजी डॉ. मोहनलालजी दूगड़ (चेन्नई) पहुंचे। डॉ. अमोलकजी गोलछा (सुपुत्र — वृद्धिचन्दजी गोलछा, कालु), डॉ. जतनजी बैद (सुपुत्र — जंवरीमलजी बैद, सरदारशहर) भी पहुंच गए। आयुर्वेद के सन्दर्भ में काम करने वाले मुन्नालालजी सेठिया भी आ गए। डॉक्टरों ने अपनी ओर से पुरुषार्थ किया। ऑक्सीजन भी लगाया गया। मुनिश्री किशनलालजी स्वामी ने मुंह से हवा देने का प्रयास किया। मुनिश्री राजेन्द्रकुमारजी स्वामी, मुनि धनंजयकुमारजी, मुनि रजनीशकुमारजी, मुनि कीर्तिकुमारजी, मुनि महावीरकुमारजी, मुनि मुदितकुमारजी, मुनि रोहितकुमारजी आदि सन्तों ने मालिश की, किन्तु सारा उपचार अरण्यरोदन के समान व्यर्थ सिद्ध हुआ।

डैथ सर्टिफिकेट मेरे हाथों में

लगभग दो बजकर पचपन मिनट पर डॉ. जतनजी बैद और अमोलकजी गोलछा ने मुझे डैथ का सर्टिफिकेट सौंपा। मैंने मुनिश्री सुमेरमलजी स्वामी 'सुदर्शन' और मुनिश्री महेन्द्रकुमारजी स्वामी से परामर्श किया। मैंने डेथ सर्टिफिकेट मुनिश्री महेन्द्रकुमारजी स्वामी के हाथों में थमा दिया ताकि वे उसमें लिखित बात से मुझे अवगत करा सकें। उन्होंने मुझे ज्ञात करा दिया कि डैथ हो गई है। फिर मैं अपने पार्श्व में स्थित साध्वीप्रमुखा कनकप्रभाजी, मुख्य नियोजिकाजी की ओर मुखातिब होकर बोला – डॉक्टरों ने तो डैथ निर्णीत कर दी है तो क्या उसकी घोषणा कर देनी चाहिए? मुनिश्री महेन्द्रकुमारजी स्वामी मेरी ओर देखते हुए बोले – अब हम आपकी छत्रछाया में हैं। फिर मैंने भावविह्वल स्वरों में सार्वजनिक घोषणा की – 'परम पूज्य आचार्यश्री महाप्रज्ञ संसार में नहीं रहे, देवलोक हो गए हैं।'

मुख्य नियोजिकाजी ने बताया कि चार-पांच दिन पूर्व बिहार के ज्योतिर्विद् मोहन माधुर्य आए थे। उन्होंने अंक गणित के आधार पर गणना की और कहा – 'यह समय आचार्यवर के स्वास्थ्य के लिए जटिल है। ऐसा योग बन रहा है कि आचार्यवर एकदम शून्य स्थिति में चले जाएंगे। ऐसा लगेगा कि ये इस दुनिया में नहीं रहे, किन्तु उस समय इन्हें कोई न छुए। ये दो घण्टे बाद पुनः सचेतन हो जाएंगे।' इसलिए दो घण्टे प्रतीक्षा करनी चाहिए। मैंने कहा – दो बजे स्थिति बदली थी, अतः चार बजे तक बॉडी को यहीं रखवा लेते हैं। निर्दिष्ट समय तक प्रतीक्षा की गई, पर वह प्रतीक्षा कभी पूरी न होने वाली प्रतीक्षा सिद्ध हुई।

पार्थिव देह का समर्पण

हमने साधु संस्था की विधि के अनुसार देहावसान के निर्णय के बाद छत्तीस मिनट बीत जाने पर रुई से श्वास-परीक्षण करने का निर्णय किया। वह समय होने पर मुनिश्री सुमेरमलजी स्वामी 'सुदर्शन' के द्वारा वह कार्य करवाया। श्वास-परीक्षण किया गया, तब घड़ी में करीब तीन बजकर इकतीस मिनट हुए थे। परीक्षण में पाया गया कि देह निष्प्राण है, श्वास का स्पन्दन नहीं है। परीक्षण के समय मैं स्वयं वहीं उपस्थित था, सन्त भी थे। फिर पार्थिव देह को नए वस्त्र धारण कराए गए। तत्पश्चात् साध्वीप्रमुखाजी आदि साध्वियों को कमरे के भीतर बुला लिया गया। तेरापंथ सभाध्यक्ष अशोकजी नाहटा (सरदारशहर), राजकरणजी सिरोहिया

(सरदारशहर) एवं सम्पतजी बच्छावत (सरदारशहर) वहां उपस्थित थे। उनकी उपस्थिति में मैंने पार्थिव देह को श्रावक समाज को सौंपा। सौंपने की भाषा यह थी — जिस देह ने मानवजाति की सेवा की, जैनशासन की सेवा की, तेरापंथ की सेवा की और मेरी महान् सेवा की, मुझे आगे बढ़ाया, आज उस पार्थिव देह को मैं अपने संघ की साक्षी से वोसिरामि-वोसिरामि। समाज को अब यह पार्थिव देह भुलाई जा रही है।

इस संघीय विधि की संपन्नता के साथ वयोवृद्ध एवं सरदारशहर में प्रवासित सन्तों में दीक्षा-ज्येष्ठ मुनिश्री सुमेरमलजी स्वामी 'सुदर्शन' ने चतुर्विध धर्मसंघ के समक्ष घोषणा की — 'अब हमारे धर्मसंघ के ग्यारहवें आचार्य महाश्रमणजी हैं।' मैंने पूज्य गुरुदेव आचार्य महाप्रज्ञ की स्मृति में संघ चतुष्टय को चार लोगस्स का ध्यान करने का निर्देश दिया।

गलियां बनी जन-संकुल

परम श्रद्धेय आचार्यश्री महाप्रज्ञ के महाप्रयाण का संवाद द्रुतगति से फैल गया। चारों ओर मोबाइल फोन और एस.एम.एस हो गए। ज्यों ही यह सूचना प्रसारित हुई, लोगों के समूह गोठी-भवन पहुंचने लगे। चारों ओर जनता का एक रेला-सा चल रहा था। गोठी-भवन, श्री समवसरण तथा परिपार्श्व की गलियां जन-संकुल बन गईं। पूज्य गुरुदेव की पार्थिव देह को लगभग साढ़े चार बजे गोठी-भवन से श्री समवसरण में स्थानान्तरित किया गया, जहां आचार्यवर ने आज अपने जीवन का अन्तिम प्रवचन किया था। चारों ओर बर्फ की शिलाएं रख दी गईं। अपार जनसमूह पार्थिव देह की अन्तिम झलक पाने के लिए उमड़ पड़ा। प्रायः सभी जाति और वर्ग के लोगों का वहां तांता-सा लग गया। कुछ ही घंटों में आसपास के क्षेत्रों के हजारों लोग पहुंच गए। रात भर लोग ससंघ आते रहे। सैकड़ों लोग चार्टर्ड प्लेनों से आए।

साप्ताहिक आध्यात्मिक अनुष्ठान

मैंने धर्मसंघ के स्तर पर 'साप्ताहिक आध्यात्मिक अनुष्ठान' की उद्घोषणा की यानी ९ मई से १५ मई तक प्रस्तुत सप्ताह में श्रावक-समाज में कोई आमोद-प्रमोद का उपक्रम न हो। यथासंभव स्मृति-सभाओं का आयोजन हो और जप का प्रयोग चले।

धर्मसंघ के नाम मेरा प्रथम संदेश

आज दिनांक ९।५।२०१० (द्वितीय वैशाख कृष्णा एकादशमी) को चिकित्सकीय प्रमाण पत्र के अनुसार अपराह्न लगभग २.५५ पर परम पूज्य गुरुदेव आचार्यश्री महाप्रज्ञ का सरदारशहर में महाप्रयाण हो गया। तेरापंथ का दशम सूर्य अदृश्य हो गया। गुरुदेव का हम सब पर महान् उपकार है। अब हम उनकी स्मृति कर सकते हैं, कृतज्ञता का भाव प्रकट कर सकते हैं।

पूज्य गुरुदेव ने मानवजाति, जैनशासन और तेरापंथ धर्मसंघ की महान् सेवा की। मैं मेरे धर्मसंघ के सभी साधु-साध्वियों और समणश्रेणी की चित्तसमाधि के लिए प्रयत्न करता रहूंगा, यह मेरा संकल्प है। तेरापंथ धर्मसंघ के श्रावक समाज को भी मैं आध्यात्मिक पोषण प्रदान करते रहने का संकल्प करता हूं। इसके अतिरिक्त जैनशासन और मानवजाति की यथासंभव और यथोचित सेवा करने का संकल्प करता हूं।

इस कठिन परिस्थिति में हम सब मनोबल रखने का प्रयास करें और धर्मशासन की प्रभावना का प्रयास करते रहें।

सरदारशहर (राज.) **आचार्य महाश्रमण**

९ मई २०१०

नोट :

यह सारा विवरण मैंने कुछ अपनी जानकारी तथा कुछ अन्य स्रोतों से प्राप्त जानकारी के आधार पर प्रस्तुत किया है। इस विवरण में दिया गया समय अनुमानित है। इसमें कहीं कोई तथ्य में अन्तर रह गया हो तो तस्स मिच्छामि दुक्कडं।

एक महासूर्य अदृश्य हो गया, जिसने अनेक-अनेक व्यक्तियों को ज्ञान का आलोक बांटा।

एक महामेघ आंखों से ओझल हो गया, जिसने कितने-कितने प्राणियों पर अनुकंपा की वर्षा की।

एक शशि दृष्टि अगोचर हो गया, जिसने कितने-कितने व्यक्तियों को तनावमुक्ति की शीतलता प्रदान की।

एक गंधहस्ति विलय को प्राप्त हो गया, जिसके यूथ में कितने-कितने परोपकारी मानवहस्ति समाविष्ट थे।

एक महासागर अवसान को प्राप्त हो गया, जिसमें गंभीरता का दर्शन होता था।

महाग्रंथ का एक अध्याय जो गरिमा के साथ आलेखित होकर संपूर्ति को प्राप्त हो गया।

परम पूज्य गुरुदेव आचार्यश्री महाप्रज्ञजी अब इतिहास का विषय बने हुए हैं। उन्होंने तेरापंथ शासन की सेवा की, जैन वाङ्मय की सेवा की और मानवजाति को महनीय अवदान दिया। अब उनकी स्मृति और स्तुति ही की जा सकती है। उनके प्रति महत्त्वपूर्ण श्रद्धांजलि यह हो सकती है कि हम उनके अवशिष्ट कार्यों को संपूर्णता की ओर ले जाने का प्रयत्न करें।

विज्जा चरणं पमोक्खो
जैन विश्व भारती लाडनूं

ISBN - 81-7195-223-2
9788171952236

₹ 20.00